प्रयागराज, कानपुर, रायबरेली, कौशाम्बी, इटावा, फिरोजाबाद, कानपुर देहात, बांदा, औरैया, उन्नाव, वाराणसी, मिर्जापुर, हमीरपुर, जालौन एवं महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश मे प्रसारित

फतेहपुर संस्करण | फतेहपुर/लखनऊ से प्रकाशित | R.N.I : UPHIN/ 2011/44792

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त समाचार पत्र

न्यूज़ वाणी

www.newswani.in

एकनाथ शिंदे - बड़े पावर प्ले की रणनीति में जुटे पेज- 2

पेज-6 एआईएमआईएम का सनगांव वार्ड से प्रत्याशी घोषित

वर्ष : 15 अंक : 32 | मंगलवार 20 जनवरी, 2026 | डाक पंजीयन संख्याः एफटीपी/एल/समाचार पत्र/2025-27/106 | पृष्ठ 06 मूल्य 1.00 रूपया

कांग्रेस की मांग, स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद को स्नान से रोकने के मामले में हस्तक्षेप करें प्रधानमंत्री

(एजेंसी) नयी दिल्ली। कांग्रेस ने ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को संगम में स्नान से कथित तौर पर रोके जाने की निंदा करते हुए सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ट्रिपल इंजन सरकार पर एक संत का अपमान करने का आरोप लगाया और कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। पार्टी के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने यह भी कहा कि पूरा देश देख रहा है कि भाजपा के शासन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत को जेड प्ल श्रेणी की सुरक्षा मिलती है, लेकिन एक शंकराचार्य के साथ इस तरह का सुलूक किया जा रहा है। उन्होंने संवाददाताओं से बातचीत में यह दावा भी किया कि यदि प्रधानमंत्री हस्तक्षेप नहीं करते हैं और हिंदुओं से माफी नहीं मांगते हैं तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह सनातनी नहीं, ध्ानातनी हैं। खेड़ा ने कहा, नरेन्द्र मोदी 12 साल से सत्ता में हैं और जिनकी मेहरबानी से ये सत्ता में बैठे हैं, उनके साथ

कैसा सलूक किया जा रहा है, यह दुनिया देख रही है। क्या शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी का अपराध यही है कि वह आपकी जय– जयकार नहीं करते, निंदा करते हैं, आधे– अधूरे मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा पर आपत्ति जताते हैं, महाकुंभ की कुव्यवस्था पर सवाल उठाते हैं, कोविड के दौरान मां गंगा के आंचल में तैरती लाशों पर बात करते हैं। उन्होंने दावा किया, सच्चाई यही है कि नरेन्द्र मोदी न काम के हैं, न राम के हैं। खेड़ा ने कहा, माघ मेले में शाही स्नान की परंपरा पुरानी है, जिसे आज तक न अंग्रेजों ने रोका, न मुगलों ने रोका, लेकिन यह सरकार विघ्न डाल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा के लोग धर्म के पीछे छिपकर, सबको मूर्ख बनाते हैं और सिर्फ अमीरों का ध्यान रखते हैं। उनका कहना था, ये जो हुआ है, उसमें प्रधानमंत्री को सामने आकर हस्तक्षेप करना चाहिए, नहीं तो अपने आप को सनातनी मत कहिए, आप ध्ानातनी ही रहेंगे। सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री हिंदुओं से माफी मांगेंगे? बीते रविवार को स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और उनके समर्थकों को संगम में जाने से कथित तौर पर रोके जाने और विरोध करने पर कुछ समर्थकों की पिटाई किये जाने के बाद विवाद खड़ा हो गया। पुलिस अधीक्षक (माघ मेला) नीरज पांडेय ने बताया कि स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने बिना किसी अनुमति के 200–250 समर्थकों के साथ पुल नंबर दो का अवरोधक तोड़कर स्नान घाट की तरफ प्रवेश किया। वहीं, शंकराचार्य के मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिषपीठाध्ीश्वर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज को प्रशासन ने जानबूझकर स्नान करने से रोका तथा यह घटना पूरी तरह से सुनियोजित थी।

सुल्तानपुर कोर्ट ने राहुल गांधी को 20 फरवरी को पेश होने का दिया आदेश

(एजेंसी) सुल्तानपुर। यूपी के सुल्तानपुर कोर्ट ने राहुल गांधी को मानहानि के एक मामले में 20 फरवरी को पेश होने का अंतिम मौका दिया है। यह मामला 8 साल पहले कर्नाटक चुनाव में अमित शाह पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी से जुड़ा है, जिस पर भाजपा नेता विजय मिश्रा ने परिवाद दर्ज किया था। कोर्ट ने व्यक्तिगत बयान दर्ज करवाने का आदेश दिया था। राहुल गांधी फिलहाल जमानत पर हैं। सुल्तानपुर के कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के हनुमानगंज के निवासी भाजपा नेता विजय मिश्रा ने अक्टूबर 2018 में राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया था। वादी का आरोप है कि अगस्त 2018 में कर्नाटक विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान राहुल गांधी ने तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी, जिससे उनकी छवि को नुकसान पहुंचा। इस मामले में पिछले सात वर्षों से अधिक समय से सुनवाई चल रही है। राहुल गांधी के कोर्ट में पेश न होने पर दिसंबर 2023 में तत्कालीन न्यायाधीश ने उनके खिलाफ वारंट जारी किया

था।इसके बाद 20 फरवरी 2024 को राहुल गांधी ने अदालत में उपस्थित हुए, जहां विशेष मजिस्ट्रेट ने उन्हें 25–25 हजार रुपये के दो मुचलकों पर जमानत दी थी। 26 जुलाई 2024 को राहुल गांधी ने अदालत में अपना बयान दर्ज कराते हुए खुद को निर्दोष बताया और इस मुकदमे को राजनीतिक साजिश करार दिया था। इसके बाद कोर्ट ने वादी पक्ष को साक्ष्य प्रस्तुत करने का निर्देश दिया, जिसके तहत लगातार गवाह पेश किए जा रहे हैं। केस करने वाले भाजपा नेता विजय मिश्र के वकील संतोष पांडेय ने बताया– 8 मई 2018 को बेंगलुरु में कर्नाटक चुनाव के दौरान राहुल गांधी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। इसमें उन्होंने कहा था, ''अमित शाह हत्या के आरोपी हैं। सुप्रीम कोर्ट ने खुद लोया मामले में इसका उल्लेख किया। इसलिए मुझे नहीं लगता कि अमित शाह की कोई विश्वसनीयता है। जो पार्टी ईमानदारी और शुचिता की बात करती है, उसका अध्यक्ष हत्या का आरोपी है।बता दें कि स्पेशल कोर्ट जज बृजमोहन हरकिशन लोया की मौत दिसंबर 2014 में नागपुर में हुई थी। उस वक्ध्त वह अपने एक साथी की बेटी की शादी में गए थे। जज लोया गुजरात के बहुचर्चित सोहराबुद्दीन शेख एनकाउंटर मामले की सुनवाई कर रहे थे। इसमें अमित शाह आरोपी थे। हालांकि लोया के बेटे ने अपने पिता की मौत को नेचुरल बताया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी इसे सामान्य मौत बताते हुए मामले की एसआईटी जांच से जुड़ी याचिका खारिज कर दी थी। इस मामले में याचिकाकर्ता विजय मिश्र ने बताया था कि राहुल के बयान से उनकी भावनाएं आहत हुईं, क्योंकि वे खुद भाजपा से जुड़े हुए थे। उनकी भी समाज में मानहानि हुई है। इसलिए उन्होंने कोर्ट में इस मामले को लेकर केस दायर किया था। विजय मिश्र ने रामचंद्र और अनिल मिश्र को बतौर गवाह पेश किया था। विजय मिश्र ने सबूत के तौर पर यूट्यूब और अन्य वेबसाइट्स पर चले राहुल के बयान को पेश किया था। उन्होंने कहा था कि गवाहों के बयान और अन्य सबूत से राहुल को कोर्ट में तलब करने के पर्याप्त सबूत हैं।

बंगाल एसएससी शिक्षक भर्ती घोटाला मामले में सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, हाईकोर्ट के आदेश पर लगाई रोक

(एजेंसी) नयी दिल्ली। पश्चिम बंगाल एसएससी शिक्षक भर्ती घोटाला मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कलकत्ता हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें 2016 की भर्ती प्रक्रिया में गैर–चयनित उम्मीदवारों को आयु सीमा में छूट देने का प्रावधान था। सुप्रीम कोर्ट ने यह साफ कर किया कि उसका पिछला आदेश केवल बेदाग और चयनित उम्मीदवारों के लिए था। अदालत ने कहा कि गैर–चयनित उम्मीदवारों को उम्र में छूट देने का हाईकोर्ट का फैसला मूल भर्ती प्रक्रिया की अखंडता को प्रभावित कर सकता है। यह मामला पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग की ओर से आयोजित 2016 की भर्ती प्रक्रिया में अनियमितता से जुड़ा है। दरअसल, एसएससी ने 2014 में 24,640 पदों के लिए भर्ती निकाली थी और 2016 में भर्ती परीक्षा आयोजित की थी।

आरएसएस-बीजेपी कुछ बिजनसमैनो के हाथों देश बेचना चाह रही,ये चाहते हैं कि लोग सवाल न करें, कांग्रेस ऐसा नहीं होने देगी : राहुल

(एजेंसी) तिरुवनंतपुरम। राहुल गांधी ने सोमवार को कहा कि आरएसएस और बीजेपी चाहती है कि जनता सवाल न करें और चुप रहें, ताकि यह कुछ बिजनेसमैन के हाथों देश को बेच सकें। राहुल केरल के कोच्चि में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि हम ऐसा बिल्कुल नहीं होने देंगे। कांग्रेस ही संविधान को बचा सकती है। उन्होंने कहा, कांग्रेस ने संविधान में बदलाव करके पंचायत, जिला और राज्य स्तर पर शासन को मजबूत किया। संविधान बचाने का मतलब है सत्ता और फैसलों का अधिकार लोगों तक पहुंचाना। राहुल ने कहा कि आरएसएस और बीजेपी सत्ता को अपने पास ही रखना चाहती हैं, लेकिन कांग्रेस सत्ता को नीचले स्तर तक पहुंचाने में भरोसा रखती है

और गांव–कस्बों में लोकतंत्र को मजबूत करना चाहती है। दिल्ली में हुई बैठकों में अलग–अलग नेताओं की अलग राय थी, लेकिन मैंने साफ कहा था कि यूडीएफ पंचायत और विधानसभा चुनाव जीतेगा। असली सवाल जीत के बाद का है। केरल में बेरोजगारी बड़ी समस्या है। यूडीएफ और कांग्रेस को ऐसा रोडमैप देना होगा, जिससे युवाओं को नौकरी मिले। मंच पर मौजूद नेतृत्व केरल की जनता की जरूरतों को समझता है और उन्हें पूरा कर सकता है। इससे पहले राहुल ने एक कार्यक्रम में कलामासेरी में डॉ. एम लीलावती को केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी का प्रियदर्शिनी साहित्य पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस दौरान राहुल ने कहा कि कोई भी देश अगर चुप रहता है तो वो महान नहीं हो सकता। चुप रहने की संस्कृति में लालच की भावना छुपी होती है। उन्होंने कहा कि महान राष्ट्र और महान लोग तब बनते हैं, जब वे अपने विचार और राय खुलकर व्यक्त करते हैं और उनके लिए संघर्ष करते हैं। केरल कांग्रेस की महापंचायत के बीच स्टेज पर आकर एक बच्चे ने राहुल के साथ सेल्फी ली। इसके बाद बच्चे ने राहुल ने बच्चे के चॉकलेट भी दी।

संजय राउत का दावा शिंदे के बाद भाजपा भी अपने पार्षदों को छिपाने की योजना बना रही

(एजेंसी) मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने सोमवार को दावा किया कि शिंदे के बाद भाजपा भी अपने पार्षदों को किसी सुरक्षित जगह पर ले जाने की योजना बना रही है। राउत ने कहा शिंदे अपने पार्षदों को पहले ही पांच सितारा होटल में भेज चुके हैं। सवाल है–कौन किससे डर रहा है? संजय राउत ने कहा नगर निकाय चुनावों के नतीजों को देखते हुए कोई भी पार्टी आसानी से बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) मेयर पद पर दावा नहीं कर सकती। मुख्यमंत्री फडणवीस स्विट्जरलैंड में वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की बैठक में हैं और यहां पार्षदों को इधर–उध्ार भेजा जा रहा है। यह अजीब है। महाराष्ट्र के 29 नगर निगमों में 15 जनवरी को चुनाव हुए थे। बीएमसी सहित अन्य निगमों के नतीजे 16 जनवरी को आया था। बीएमसी के 227 सीटों में भाजपा ने 89 वार्ड जीते। शिंदे गुट को 29 सीटें मिलीं। मेयर के लिए बहुमत का आंकड़ा 114 है। इसके लिए भाजपा को शिंदे गुट के 25 पार्षदों के समर्थन की जरूरत होगी। 29 नगर निगमों में मेयर पद के लिए 22 जनवरी को लॉटरी निकाली जाएगी। इसमें यह तय होगा कि पद ओपन कैटेगरी, अनुसूचित

जाति,जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग या महिलाओं के लिए आरक्षित रहेगा। कैटेगरी तय होते ही उसी दिन या अगले दिन अधिसूचना जारी की जाएगी। इसके बाद सात दिन का नोटिस अनिवार्य होने के कारण मेयर चुनाव 29 या 30 जनवरी को होने की संभावना है। अगर अधिसूचना 23 जनवरी को जारी हुई तो मतदान 30 या 31 जनवरी को कराया जा सकता है। मुख्यमंत्री फडणवीस 24 जनवरी को स्विट्जरलैंड से वापस आएंगे। चुनाव नतीजों के बाद शिवसेना ने अपने 29 पार्षदों को बांद्रा के होटल ताज लैंड्स एंड में ठहराया है। पार्टी का कहना है कि होटल में पार्षदों के लिए ओरिएंटेशन वर्कशॉप किया जा रहा है, ताकि उन्हें देश की सबसे समृद्ध नगर निकाय बीएमसी के कामकाज की जानकारी दी जा सके। सूत्रों का कहना है कि हॉर्स–ट्रेडिंग को रोकने के लिए यह सब किया जा रहा है। सभी 29 पार्षदों को 21 जनवरी दोपहर 3 बजे तक होटल में रहने का निर्देश दिया गया है। इससे पहले 2017 में नगर निगम चुनावों के बाद अविभाजित शिवसेना ने 7 मनसे कॉर्पोरेटर का दलबदल करवाया था।

कर्नल सोफिया कुरैशी केस: सुप्रीम कोर्ट ने एमपी सरकार से पूछा, अब तक मंत्री पर केस चलाने की मंजूरी क्यों नहीं

(एजेंसी) नयी दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान कर्नल सोफिया कुरैशी पर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में मध्य प्रदेश के

भाजपा मंत्री कुंवर विजय शाह के खिलाफ जांच पूरी हो जाने के बावजूद राज्य सरकार की ओर से अब तक अभियोजन की मंजूरी न देने पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त सवाल उठाए हैं। मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) की अगुवाई वाली बेंच ने सुनवाई के दौरान कहा कि विशेष जांच टीम (एसआईटी) ने अगस्त 2025 में ही अपनी जांच पूरी कर ली थी और राज्य सरकार से अभियोजन (केस चलाने) की अनुमति मांगी गई थी, लेकिन अब तक इस पर कोई फैसला नहीं लिया गया है। कोर्ट ने इसे गंभीर मामला बताते हुए कहा कि कानून के तहत सरकार पर समय पर निर्णय लेने की वैधानिक जिम्मेदारी है। सुनवाई के दौरान सीजेआई ने सीधे तौर पर पूछा, क्या हम सही समझ रहे हैं कि एसआईटी) ने राज्य सरकार से कार्रवाई के लिए अनुमति मांगी है और सरकार अब तक उस पर चुप बैठी हुई है? कोर्ट में मौजूद एसआईटी के एक सदस्य ने बताया कि उन्हें अब डीआईजी इंटेलिजेंस के तौर पर नियुक्त किया गया है। इस पर कोर्ट ने एसआईटी की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि रिपोर्ट में दो पुराने मामलों का भी जिक्र है, उनमें एक नवंबर 2020 का और दूसरा उससे पहले का। हालांकि, इन मामलों को मौजूदा जांच में शामिल नहीं किया गया। सीजेआई ने इस पर नाराजगी जताते हुए कहा कि समय की कमी के कारण अगर उन मामलों को छोड़ा गया है तो एसआईटी को उम्मीद है कि वो उन आरोपों की भी जांच पूरी करेगी। कोर्ट ने ये भी रिकॉर्ड किया कि एसआईटी) का गठन खुद सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हुआ था और पूरी रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में कोर्ट को सौंपी गई है। रिपोर्ट के पैरा 10.2 में कुछ पुराने बयानों का जिक्र है, जिन्हें फिलहाल बाहर रखा गया। एसआईटी) ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएस) की धारा 217 के तहत राज्य सरकार को रिपोर्ट भेजकर अभियोजन की पूर्व अनुमति मांगी थी, जो कि किसी मंत्री के खिलाफ कोर्ट द्वारा संज्ञान लेने के लिए जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ शब्दों में कहा, राज्य सरकार को कानून के मुताबिक अभियोजन की मंजूरी देने या न देने पर फैसला करना ही होगा। कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार को निर्देश दिया है कि वो दो हफ्ते के भीतर अभियोजन की मंजूरी पर फैसला लेकर अपनी अनुपालन रिपोर्ट दाखिल करे। इसके साथ ही एसआईटी को ये भी निर्देश दिया गया है कि वो रिपोर्ट में बताए गए अन्य पुराने मामलों की भी जांच कर रिपोर्ट सौंपे। मामले की अगली सुनवाई अब राज्य सरकार की अनुपालन रिपोर्ट और एसआईटी की अतिरिक्त जांच रिपोर्ट के बाद होगी।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद 24 घंटे से अनशन पर,बोले- माघ मेले में हर बार आऊंगा, लेकिन फुटपाथ पर रहूंगा

(एजेंसी) प्रयागराज। प्रयागराज माघ मेले में शंकराचार्य स्वामी

अविमुक्तेश्वरानंद का धरना जारी है। पालकी यानी रथ यात्रा रोके जाने के विरोध में शंकराचार्य वहीं धरने पर बैठे हैं, जहां पुलिस उन्हें छोड़ गई थी। वे अपने पंडाल में पूरी रात ठंड में धरने पर बैठे रहे। 25 घंटे से अनाज का एक दाना भी ग्रहण नहीं किया। पानी तक छोड़ दिया। इस बीच शंकराचार्य ने सोमवार दोपहर प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा जब तक प्रशासन आकर माफी नहीं मांगता, तब तक हम अपने आश्रम में प्रवेश नहीं करेंगे। फुटपाथ पर ही रहेंगे। उन्होंने कहा– शंकराचार्य जब भी इतिहास में स्नान करने गए हैं, पालकी में ही गए हैं। हर साल इसी पालकी में जाते रहे हैं। अविमुक्तेश्वरानंद ने साफ कहा कि जब तक पुलिस प्रशासन सम्मान और प्रोटोकॉल के साथ नहीं ले जाएगा, तब तक गंगा स्नान नहीं करूंगा। मैं प्रण लेता हूं कि हर मेले के लिए प्रयागराज आऊंगा, लेकिन कभी भी शिविर में नहीं रहूंगा। फुटपाथ पर ही अपनी व्यवस्था करूंगा। इससे पहले मीडिया प्रभारी शैलेंद्र योगीराज ने बताया– शंकराचार्य ने कल से कुछ भी नहीं खाया है। कोई प्रशासनिक अधिकारी उनसे मिलने भी नहीं आया। सुबह अपनी पूजा और दंड तर्पण उसी स्थान पर किया। इस बीच मौनी अमावस्या पर शंकराचार्य की रथ यात्रा के दौरान हुए बवाल का सीसीटीवी सामने आया है। वीडियो में दिख रहा है कि पुलिस ने रास्ते पर बैरिकेडिंग लगाई थी। इसी दौरान शंकराचार्य के समर्थकों और पुलिस के बीच कहासुनी हुई। समर्थकों ने बैरिकेडिंग तोड़कर आगे निकलना शुरू कर दिया।

सम्पादकीय

ठाकरे भाइयों की पीड़ा हुई सर्वाजनिक

महाराष्ट्र स्थानीय निकायों के चुनावों में करारी हार के बाद उद्धव ठाकरे ने भाजपा पर बड़ा आरोप लगाया। मै नफीस जाफरी आपको यह बता दूं कि उद्धव ने कहा कि भाजपा ने इस चुनाव में बहुत सा पैसा खर्च किया है। उन्होंने प्रेशर कुकर बांटे, साड़ियां बांटी और बाकी चीजें भी बांटी। इस सबके लिए पैसा कहां से आया। ईडी, सीबीआई ने इसका संज्ञान क्यों नहीं लिया? उन्होंने आरोप लगाया कि जिस तरह उनकी पार्टी को तोड़कर उनके ही पार्टी नेता को मुख्यमंत्री बनाया गया था, वैसे ही भाजपा अब शिंदे की शिवसेना को तोड़कर बीएमसी में अपना महापौर बनाएगी। उद्धव ठाकरे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए आरोप लगाया कि इस चुनाव में पैसे और मुतखोरी का व्यापक इस्तेमाल हुआ है। चुनाव से चार दिन पहले भारी मात्रा में पैसा बांटा गया था। लोगों को मिक्सर, वॉशिंग मशीन दी गई। इसकी जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि चुनाव में बांटने के लिए ये बेहिसाब पैसा कहां से आया? क्या नोटबंदी नाकाम हो गई? उद्धव ने प्रधानमंत्री मोदी को निशाने पर लेते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी की रैली में लगभग सभी कुर्सियां खाली थीं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या वाकई उन्हें इतने वोट मिले हैं, अगर मिले तो उन्हें किसने वोट दिए? खाली कुर्सियों ने? खाली कुर्सियां कैसे वोट दे सकती हैं शिवसेना (यूबीटी) के नेता ने कहा कि हम मुंबई में अपना मेयर बनाना चाहते हैं और इस दिशा में काम करेंगे। चुनाव के ये नतीजे हमें कमजोर नहीं करते। हमारे उम्मीदवारों ने कड़ी मेहनत की थी और वे जीते भी हैं। बीएमसी चुनाव में सत्ता गंवाने के बाद शिवसेना (उद्धव गुट) और राज ठाकरे की पहली प्रतिक्रिया सामने आई है। शिवसेना ने मराठी मानुस की बात करते हुए कहा कि यह अभी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। वहीं राज ठाकरे ने भी मराठी मानुस का ही जिक्र किया है। गौरतलब है कि पिछले तीन दशक से बीएमसी की सत्ता में काबिज रही शिवसेना इस बार महायुति से चुनाव हार गई है। बीएमसी में भाजपा को 89, शिवसेना (उद्धव) को 65, शिवसेना (शिंदे गुट) को 29 सीटें मिली हैं। शिवसेना (उद्धव) ने एक्स पर पोस्ट कर हार के बाद एक बार फिर मराठी मानुस की बात ही है। पार्टी ने एक्स किए पोस्ट में लिखा है। यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, मराठी मानुस को जब तक उसका सही सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक यह ऐसे ही जारी रहेगी। इस पोस्ट में बालासाहेब ठाकरे की तस्वीर लगी है। गौरतलब है कि इस बार पहली बार बीएमसी में भाजपा का मेयर होगा। भाजपा ये चुनाव जीतने के लिए पूरा जोर लगा दिया था। खुद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने चुनाव की बागडोर संभाल ली थी। वहीं, राज ठाकरे ने एक्स पर पोस्ट करके कहा है कि अगर मुंबई में मराठी मानुस के साथ अत्याचार हुआ तो उनकी पार्टी किसी को छोड़ेगी नहीं। राज ने अपने पोस्ट में लिखा है कि सर्वप्रथम, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना और शिवसेना के सभी निर्वाचित पार्षदों को मेरी हार्दिक बधाई। इस बार का चुनाव आसान नहीं था। यह धन और सत्ता की शक्ति बनाम शिवसेना की शक्ति की लड़ाई थी। लेकिन ऐसे संघर्ष में भी दोनों दलों के कार्यकर्ताओं ने जमकर मुकाबला किया। उनकी प्रशंसा करने लायक कुछ खास नहीं है। यह दुख की बात है कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना को इस बार अपेक्षित सफलता नहीं मिली, लेकिन हम निराश होने वालों में से नहीं हैं। हमारे चुने हुए पार्षद मराठियों की हितों की रक्षा करेंगे। अगर किसी मराठी मानुस के साथ अत्याचार होगा तो हम किसी को छोड़ेंगे नहीं। गौरतलब है कि एमएनएस को बीएमसी चुनावों में केवल छह सीटों से ही संतोष करना पड़ा है। बीएमसी चुनावों के लिए उद्धव और राज ठाकरे भाइयों के बीच गठबंधन हुआ था। लेकिन चुनाव नतीजों ने दोनों को निराश किया है। वहीं बीएमसी की सत्ता में भाजपा का राज शुरू होने वाला है।

नफीस जाफरी

कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद ने मेहताब आलम को विवेकानंद यूथ अवार्ड से नवाजा गया

राजस्थान के साहित्यिक एवं सामाजिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद ने मेहताब आलम को विवेकानंद यूथ अवार्ड से नवाजा गया है है। मेहताब आलम जोधपुर जिले से संबंधित हैं और साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रहे हैं। कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद एक ऐसा सशक्त मंच है, जो नवांकुर रचनाकारों को परिवार, समाज और संस्कृति से जोड़ते हुए उनमें सामाजिक व साहित्यिक दायित्वों की भावना विकसित करता है। मेहताब आलम इससे पूर्व भी विभिन्न महत्वपूर्ण दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर चुके हैं। वे समाज सेवा, सद्भावना, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक मूल्यों के सक्रिय संवाहक के रूप में जाने जाते हैं। अनेक साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने स्थानीय से लेकर राज्य स्तर तक राजस्थानी संस्कृति के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया है। परिषद को विश्वास है कि उनके नेतृत्व में साहित्य, महिला एवं बाल विकास, सामाजिक कार्यों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को नई दिशा और गति प्राप्त होगी। इस अवसर पर परिषद के पदाधिकारियों , सदस्यों एवं बेगम साहिबा नीलोफ़र नियाजी, अब्दुल दबीर,ज़ेबा मुगीसुद्दीन, और उरुज फातिमा अली जी ने मेहताब आलम को उनके नए ‘विवेकानंद यूथ अवार्ड’ के लिए हार्दिक बधाई,मुबारकबाद एवं शुभकामनाएं दीं। परिषद का मानना है कि उनकी नेतृत्व क्षमता, सक्रियता और संस्कृति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता संगठन की गतिविधियों को प्रदेश में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मेहताब आलम का वक्तव्य ‘अवार्ड’ पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मेहताब आलम ने कहा–"राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में हमे विवेकानंद यूथ अवार्ड से नवाजा गया है मेरे लिए गौरव का विषय है। मैं इस दायित्व का निर्वहन पूरी ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के साथ करूंगा तथा साहित्य और संस्कृति को जन–जन तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहूंगा।

गुलफिशा खान

एकनाथ शिंदे - बड़े पावर प्ले की रणनीति में जुटे

मुंबई का अगला महापौर कौन बनेगा। ऐसी चर्चा है कि इस पर फैसला जनवरी के अंत तक होगा। गौरतलब है कि बीएमसी चुनावों में महायुति ने बड़ी जीत दर्ज की है। इस जीत के साथ ही भाजपा ने बीएमसी में पिछले करीब तीन दशक से सत्ता में रही उद्धव ठाकरे की शिवसेना को बेदखल कर दिया है। भाजपा ने बीएमसी में 89 सीटों पर जीत दर्ज की है। शिवसेना (उद्धव) ने 65 वार्ड पर कब्जा किया है। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 29 वार्ड पर जीत दर्ज की है। वहीं, कांग्रेस ने 24 वार्डों में जीतकर अपनी मौजूदगी दर्ज करवाई है। एआईएमआईएम को 8, मनसे को 6, एनसीपी को 3, सपा को 2 और एनसीपी शरद पवार को को 1 वार्ड मिला है। सूत्रों के मुताबिक अब महायुति महापौर बनाने की प्रक्रिया में जुट गई है। हालांकि, अभी इस पर सस्पेंस जारी है और इसके इस महीने के अंत तक खत्म होने की उम्मीद है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, अगले सप्ताह नगर विकास विभाग महापौर पद के लिए आरक्षण की लॉटरी निकालेगा। इस प्रक्रिया के पूरा होने के ठीक दस दिन बाद महापौर का चुनाव संपन्न कराया जाएगा। इस देरी के कारण अब यह स्पष्ट है कि जनवरी महीने के आखिरी दिनों में ही मुंबई को अपना नया महापौर मिल पाएगा। तो वहीं दूसरी ओर देश की सबसे अमीर महानगरपालिका बीएमसी के चुनाव नतीजे लगभग साफ हो चुके हैं। जैसा कि उल्लेखनीय है कि भाजपा 89 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है, लेकिन असली कहानी उन 29 सीटों में छिपी है जो मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने जीती हैं। आंकड़ों का गणित ऐसा उलझा है कि बिना शिंदे के धनुष–बाण के भाजपा का मेयर बनना नामुमकिन है। बहुमत के लिए 114 का आंकड़ा चाहिए। भाजपा के पास 89 सीटें हैं, यानी उसे अभी भी 26 और पार्षदों की जरूरत है, शिंदे की 29 सीटें ही भाजपा को सत्ता की कुर्सी तक पहुंचा सकती हैं। शिंदे के पास अब वह ताकत है जिससे वह भाजपा से अपनी शर्तें मनवा सकें। शिंदे गुट के प्रवक्ता और अन्य नेताओं ने पहले ही संकेत दे दिए हैं कि मुंबई का मेयर शिवसेना (शिंदे) का होना चाहिए क्योंकि यह बालासाहेब की विरासत है। जहां एक ओर पार्टी के प्रवक्ता और कार्यकर्ता शिवसेना का मेयर होने की मांग कर रहे हैं, वहीं मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बेहद सधा हुआ जवाब दिया है। शिंदे ने कहा कि हमारा एजेंडा विकास है। हम महायुति के तौर पर लड़े हैं और साथ बैठकर तय करेंगे कि मुंबई के हित में क्या बेहतर है। हालांकि, राजनीतिक जानकारों का मानना है कि शिंदे का यह नरम रुख एक बड़े पॉवर प्ले की रणनीति हो सकती है। तो सवाल है की क्या अगले कुछ दिन महा–सियासी ड्रामा होने की उम्मीद है? आने वाले 48 से 72 घंटे मुंबई की राजनीति के लिए बेहद अहम हैं। शिंदे गुट मांग कर सकता है कि पहले ढाई साल शिवसेना का मेयर रहे। चर्चा यह भी है कि ठाणे में स्पष्ट बहुमत (75 सीटें) मिलने के बाद शिंदे मुंबई में भाजपा को मेयर पद देकर बदले में महत्वपूर्ण समितियों जैसे स्टैंडिंग कमेटी पर नियंत्रण मांग सकते हैं। 24 सीटों वाली कांग्रेस और अन्य छोटे दल क्या रुख अपनाते हैं, इस पर भी सबकी नजर है। शिंदे जानते हैं कि 2029 के विधानसभा चुनाव से पहले बीएमसी पर पकड़ बनाना उनकी पार्टी की साख के लिए जरूरी है। अगर वह भाजपा को आसानी से मेयर पद दे देते हैं, तो उनके कार्यकर्ताओं में गलत संदेश जा सकता है। इसलिए, पर्दे के पीछे डिप्टी मेयर, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन और महत्वपूर्ण वार्डों को लेकर कड़ी सौदेबाजी लगभग तय मानी जा रही है।

असदुद्दीन ओवैसी महाराष्ट्र की राजनीति में मुसलमानों के नेता बन कर उभरे

फरीद वारसी

महाराष्ट्र और मुंबई नगरपालिका चुनाव में कई जगहों पर शानदार सफलता हासिल करने के बाद आईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने मीडिया से खास बातचीत की। इस सफलता के लिए उन्होंने आवाम का शुक्रिया अदा किया और इसके साथ ही उन्होंने पार्टी के प्रमुख नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी इस जीत के लिए बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने गैर मुस्लिम राजनीति पर भी खुलकर बात की। मालूम हो कि महाराष्ट्र की 29 महानगरपालिकाओं के चुनाव नतीजों ने इस बार राज्य की राजनीति में एक अहम संकेत दिया है। यह संकेत है– ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुस्लिमीन की लगातार और रणनीतिक बढ़त का। सीमित संसाधनों, तीखे विरोध और आंतरिक चुनौतियों के बावजूद एआईएमआईएम ने इन चुनावों में 126 सीटें जीतकर यह साबित कर दिया कि पार्टी अब महाराष्ट्र की शहरी राजनीति में एक स्थायी और प्रभावी ताकत बन चुकी है। सबसे अहम बात यह है कि एआईएमआईएम ने 29 में से 12 महानगरपालिकाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जो पार्टी के धीमे लेकिन स्थिर विस्तार की कहानी कहती है। एआईएमआईएम का सबसे शानदार प्रदर्शन छत्रपति संभाजीनगर (पूर्व औरंगाबाद) महानगरपालिका में देखने को मिला, जहां पार्टी ने 33 सीटें हासिल कीं। यह परिणाम 2015 के चुनावों की तुलना में एक बड़ा उछाल है, जब एआईएमआईएम को यहां 24 सीटें मिली थीं। यानी पार्टी ने 9 सीटों की शुद्ध बढ़त दर्ज की। यह जीत केवल संख्या का खेल नहीं है, बल्कि यह बताती है कि एआईएमआईएम ने यहां अपना सामाजिक आधार और संगठनात्मक पकड़ दोनों मज़बूत की है। छत्रपति संभाजीनगर अब एआईएमआईएम के लिए सिर्फ एक नगर निगम नहीं, बल्कि राज्य स्तर पर राजनीतिक प्रयोगशाला बन चुका है। अगर दूसरे अन्य महानगरपालिकाओं में एआईएमआईएम का प्रदर्शन की बात करें तो–छत्रपति संभाजीनगर– 33, मालेगांव – 21, नांदेड– 14,अमरावती – 12, धुले– 10, सोलापुर– 8, मुंबई – 8, नागपुर– 6, ठाणे– 5, अकोला– 3, अहिल्यानगर– 2और जालना– 2। यह आंकड़े बताते हैं कि एआईएमआईएम का प्रभाव केवल मराठवाड़ा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विदर्भ, उत्तर महाराष्ट्र और मुंबई महानगर तक फैल चुका है। इन चुनावों में एआईएमआईएम की सफलता के केंद्र में रहे पूर्व सांसद और एआईएमआईएम महाराष्ट्र अध्यक्ष इम्तियाज़ जलील। उन्हें चुनावों से पहले पार्टी को सीट बंटवारे को लेकर आरोप, आंतरिक असंतोष और स्थानीय नेतृत्व के टकराव जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विरोधियों ने यहां तक दावा किया कि पार्टी भीतर से कमजोर हो रही है। लेकिन इम्तियाज़ जलील ने इन सभी चुनौतियों के बीच संगठन को एकजुट रखा। उन्होंने स्थानीय नेतृत्व को निर्णायक भूमिका दी, टिकट वितरण में सामाजिक समीकरणों को प्राथमिकता दी, शहरी मुद्दों (रोज़गार, शिक्षा, बुनियादी सुविधाएं) को केंद्र में रखा और नतीजा यह हुआ कि एआईएमआईएम ने विरोध और विवादों के बावजूद मैदान में बेहतर प्रदर्शन किया। इन चुनावों में एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी की सक्रिय प्रचार भूमिका भी निर्णायक रही। ओवैसी की रैलियों और सभाओं ने पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह भरा। युवा और अल्पसंख्यक मतदाताओं को जुटाने का काम किया। एआईएमआईएम को केवल विरोध की राजनीति से आगे ले जाकर स्थानीय शासन का विकल्प के रूप में पेश किया। विशेष रूप से मराठवाड़ा और मुंबई में उनकी सभाओं का सीधा असर वोट प्रतिशत और सीटों पर दिखाई दिया। मुंबई महानगरपालिका चुनाव एआईएमआईएम के लिए रणनीतिक सफलता साबित हुए। पार्टी ने यहां 8 सीटें जीतीं, जबकि 2017 के बीएमसी चुनावों में एआईएमआईएम को केवल 2 सीटें मिली थीं यानी इस बार 6 सीटों की सीधी बढ़त हुई है। एआईएमआईएम ने मुस्लिम बहुल इलाकों में मज़बूत पकड़ बनाई। वार्ड नंबर 134, 136, 137, 138, 139, 140, 143 और 145 से एआईएमआईएम की जीत ने यह साफ कर दिया कि पार्टी अब मुंबई में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के विकल्प के रूप में उभर रही है। खास बात यह भी रही कि एआईएमआईएम मनसे से आगे निकल गई, जिसे बीएमसी में 6 सीटें मिलीं। यह तुलना राजनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। एआईएमआईएम की यह सफलता संकेत देती है कि शहरी मुस्लिम मतदाता अब पारंपरिक दलों से इतर विकल्प तलाश रहा है। ओवैसी श्प्रतीकात्मक राजनीतिश से आगे बढ़कर स्थानीय सत्ता में भागीदारी की ओर बढ़ रही है। पार्टी ने खुद को केवल विरोधी नहीं, बल्कि नगर प्रशासन में दखल रखने वाली ताकत के रूप में स्थापित किया है। हालांकि, चुनौतियां अब भी बनी हुई हैं (विस्तार के साथ संगठनात्मक अनुशासन, नए वर्गों तक पहुंच और गठबंधन राजनीति) लेकिन मौजूदा नतीजे यह साफ करते हैं कि एआईएमआईएम अब महाराष्ट्र की नगर निगम राजनीति में अनदेखी नहीं की जा सकने वाली शक्ति बन चुकी है। 2026 के महानगरपालिका चुनाव एआईएमआईएम के लिए केवल सीटों की जीत नहीं, बल्कि एक राजनीतिक संदेश हैं– एआईएमआईएम आई है, टिकने के इरादे से।

पतंगबाजी में मगन सरकार

असम के कालियाबोर में एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने महाराष्ट्र नगरीय निकाय चुनावों को लेकर कांग्रेस पर एक बेहूदा टिप्पणी की। इन चुनावों में भाजपा ने कई निगमों पर अपना कब्जा जमाया है और सबसे बड़ी जीत तो बृहन्नमुंबई नगरपालिका में मिली है, जहां भाजपा ने शिवसेना को पीछे कर दिया है। लेकिन महाराष्ट्र के चुनावों में कांग्रेस को चौथा स्थान मिला है, जिस पर अपनी जीत का घमंड दिखाते हुए नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस का जन्म 1885 में मुंबई में हुआ था, लेकिन फिर भी वह अपनी नकारात्मक राजनीति के कारण पहले स्थान पर नहीं आ पाई। कांग्रेस ने देश का भरोसा खो दिया है क्योंकि उसके पास कोई विकास का एजेंडा नहीं है। महाराष्ट्र में जहां कांग्रेस ने सालों तक शासन किया, कांग्रेस पूरी तरह खत्म हो गई है।असम चुनावों में महाराष्ट्र के नगरीय निकाय चुनावों का जिक्र कर और उसमें भी कांग्रेस की हार पर टिप्पणी कर प्रधानमंत्री मोदी क्या हासिल करना चाहते हैं, यह समझना कठिन नहीं है। दरअसल उनकी सबसे बड़ी कुंठा ही यही है कि वे कांग्रेस को खत्म नहीं कर पा रहे हैं। नेहरूजी से लेकर राहुल गांधी तक के लिए तमाम अपमानजनक और अक्सर झूठी बातें कहने के बावजूद गांधी परिवार को धर्मनिरपेक्ष राजनीति से डिगा पाने में नरेन्द्र मोदी असफल रहे हैं, इसलिए उन्हें चुनावी जीत के बावजूद खुशी नहीं मिल पा रही।यूं भी नरेन्द्र मोदी चुनाव दर चुनाव जीतने के बावजूद अपनी जिम्मेदारियों को कहां पूरा कर पा रहे हैं, उनकी जगह राहुल गांधी ही पीड़ितों के आंसू पोंछते नजर आते हैं। अभी इंदौर में ही कम से कम 24 लोगों की मौत गंदा पानी पीने से हो गई। इसमें लोगों की नहीं सरकार की गलती है, जो लोगों को पीने का साफ पानी मुहैया नहीं करा पाई। अब भी कई लोग इसी वजह से अस्पताल में भर्ती हैं। लेकिन भाजपा अपनी गलती मानने की जगह मामले को किस तरह दबाने में लगी है, इसकी कई खबरें बाहर आ चुकी हैं।मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार है और इंदौर नगरनिगम पर भी भाजपा का ही कब्जा है। और इसके लिए भी भाजपा नेता नरेन्द्र मोदी को ही श्रेय देते हैं। जैसे रविवार के कई अखबारों में मुंबई में जीत का श्रेय नरेन्द्र मोदी को देने वाले विज्ञापन एकनाथ शिंदे ने छपवाए हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस ने भी मोदी के नेतृत्व को ही जीत का श्रेय दिया है। लेकिन क्या मोदी की भूमिका यहीं तक सीमित है कि वे भाजपा को किसी भी तरह से जीत दिलाएं और उसके बाद हारे हुए दलों पर नकारात्मक टिप्पणी करें। क्यों नरेन्द्र मोदी को अब तक फुर्सत नहीं मिली कि वे एक बार कुछ घंटों के लिए ही इंदौर चले जाते। वहां भी राहुल गांधी ही पहुंचे।राहुल गांधी ने पीड़ित परिवारों से मुलाकात कर लिखा कि बीजेपी की डबल इंजन सरकार का नया स्मार्ट सिटी मॉडल। पानी में जहर, हवा में जहर, दवा में जहर, जमीन में जहर, और, जवाब मांगो तो चलेगा बुलडोजर! कुछ इस तरह इस मॉडल में गरीबों की मौतों के लिए कोई भी जिम्मेदार नहीं होता। सरकार अभी उनकी लापरवाही से हुई इंदौर की त्रासदी की जवाबदेही ले– दोषियों को सजा और पीड़ितों को अच्छा इलाज और मुआवजा जल्द से जल्द दिलाए।बता दें कि राहुल गांधी के इंदौर आने पर भी भाजपा विरोध कर रही थी। उसके मुताबिक राहुल गांधी राजनीति के मकसद से आ रहे थे। हालांकि इसे भाजपा की नासमझी ही माना जाए, क्योंकि राजनेता अगर राजनीति न करे तो फिर क्या करे। और अगर पीड़ितों के हक में आवाज उठाना या उनके आंसू पोंछने आना राजनीति है, तो ऐसी राजनीति देश के हर जनप्रतिनिधि को करनी चाहिए। लेकिन मणिपुर से लेकर इंदौर तक हर बार राहुल गांधी ही पीड़ितों के साथ खड़े दिखते हैं। नरेन्द्र मोदी तो केवल पतंगबाजी, पूजा–पाठ, ट्रेन को हरी झंडी दिखाते या फिर चुनावी सभाओं को संबोधित करते दिखते हैं। हैरानी की बात ये है कि इस पर भी मीडिया नरेन्द्र मोदी से सवाल करने की जगह राहुल गांधी से ही सवाल करता है। शनिवार को ही जब राहुल इंदौर में थे, तो एक पत्रकार ने उनसे यही राजनीति करने वाला सवाल पूछा तो राहुल गांधी ने साफ कहा कि वे नेता प्रतिपक्ष हैं और उनकी जिम्मेदारी है कि वे लोगों के दुख में उनके साथ खड़े रहें। राहुल गांधी ने ये भी कहा कि उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि कौन इस बारे में क्या सोचता है। यह सीधा लेकिन चुभता हुआ जवाब जनता को भी सुनना चाहिए जो इस बात से खुश रहती है कि उसके प्रधानमंत्री कितने धार्मिक आयोजनों में स्वांग भरते दिखाई देते हैं। उसे इस बात की नाराजगी होनी चाहिए कि प्रधानमंत्री अपनी जिम्मेदारी पूरी करते हुए क्यों नहीं दिखते। और प्रधानमंत्री की तर्ज पर ही अमित शाह भी चल रहे हैं। अभी पहलगाम और दिल्ली के आतंकी हमलों के जख्म भरे नहीं हैं। देश की सीमाओं पर लगातार खतरा बना हुआ है। नागरिकों को सुरक्षित महसूस नहीं हो रहा। लेकिन राजधानी दिल्ली को पतंगबाजी में अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाने की योजना अमित शाह बना रहे हैं। बता दें कि दिल्ली में अभी तीसरे अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने निर्देश दिए कि राजधानी को पतंगोत्सव का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय केंद्र बनाने के लिए एक विशेष समिति बनाई जाए। दिल्ली के बांसेरा पार्क में आयोजित डीडीए के सालाना पतंगोत्सव में शामिल हुए अमित शाह ने कहा कि दिल्ली में इस आयोजन को आगे बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। अगर सतत प्रयास किए जाएं और जनभागीदारी बढ़ाई जाए, तो यह उत्सव देश ही नहीं बल्कि दुनिया के बड़े पतंग महोत्सवों में अपनी जगह बना सकता है।पतंगबाजी की इतनी चिंता करने वाले अमित शाह ने दिल्ली के प्रदूषण को खत्म करने के लिए ऐसा कोई दूरगामी नजरिया सामने रखा हो, याद नहीं पड़ता। मान लें कि इसे पर्यावरण मंत्री की जिम्मेदारी माना जाए, तो क्या पतंगबाजी को संस्कृति मंत्री की जिम्मेदारी नहीं मानना चाहिए। अमित शाह के पास तो और भी बड़े महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिन पर उन्हें ध्यान देना चाहिए। लेकिन वे दिल्ली में पतंगबाजी की चिंता कर रहे हैं और नरेन्द्र मोदी विपक्ष में बैठी कांग्रेस के लिए कह रहे हैं कि उसने विकास के काम नहीं किए इसलिए महाराष्ट्र में हार हुई। भाजपा को तो जीत मिली है, फिर नरेन्द्र मोदी काम क्यों नहीं कर रहे, ये सवाल अब पूछना जरूरी है।

बेरोजगारी का दंश

केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट चिंता बढ़ाने वाली है, जिसमें गत दिसंबर में बेरोजगारी दर बढ़कर 4.8 फीसदी होने की बात कही गई है। भारत दुनिया में युवाओं के देश के रूप में जाना जाता है। लेकिन हम इस युवा शक्ति का भरपूर उपयोग राष्ट्र विकास में नहीं कर पा रहे हैं। चिंता की बात यह भी है कि देश के शहरी क्षेत्र में पंद्रह वर्ष से अधिक आयुवर्ग के युवाओं में बेरोजगारी की दर गांवों के मुकाबले ज्यादा है। जहां शहरों में यह प्रतिशत बढ़कर 6.7 फीसदी हुआ है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में यह 3.9 फीसदी स्थिर है। हाल ही के वर्षों में बेरोजगारी देश में बड़ा मुद्दा रहा है, जो भारत जैसे विकासशील देश के हित में नहीं है। किसी भी अर्थव्यवस्था में विकास दर तभी सार्थक होगी, जब रोजगार के नये मौके उपलब्ध हो रहे हों। नीति–नियंताओं को आत्ममंथन करना होगा कि दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था में रोजगार के नये अवसर क्यों नहीं बन रहे हैं। सरकारें सुनिश्चित करें कि युवाओं को देश की तरक्की में योगदान देने का अवसर मिले। यदि बेरोजगारी की दर बढ़ रही है तो इसके मायने हैं कि संगठित और असंगठित क्षेत्र में नौकरी के मौके बढ़ नहीं रहे हैं। कहा जा रहा है कि औद्योगिक क्षेत्रों में एआई और डिजिटलीकरण के चलते भी नौकरियां घटी हैं। तो क्या हम इस चुनौती के लिये अपने युवाओं को तैयार कर रहे हैं?निश्चित रूप से देश के नीति–नियंताओं को मंथन करना चाहिए कि 'आत्मनिर्भर भारत' और 'स्किल इंडिया' जैसे अभियानों के जमीनी परिणाम उत्साहवर्धक क्यों नहीं हैं? युवाओं की कौशल विकास कार्यक्रमों में भागीदारी के बावजूद रोजगार के मौके क्यों नहीं बढ़ रहे हैं? क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था समय के साथ कदमताल नहीं कर पा रही है? विडंबना यह भी है कि बढ़ती आबादी के बावजूद सरकारी क्षेत्र की नौकरियां कम हो रही हैं। युवाओं की शिकायत होती है कि सरकारी नौकरियों में भर्ती प्रक्रिया में तमाम तरह की विसंगतियां व्याप्त हैं। वे परीक्षा प्रणाली पर भी सवाल उठाते रहे हैं। निस्संदेह, बढ़ती बेरोजगारी हमारे विकास के मापदंडों पर भी सवाल खड़ी करती है। निश्चित रूप से संतुलित आर्थिक विकास की सार्थकता के लिए जरूरी है कि देश में प्रति व्यक्ति आय बढ़े तथा आर्थिक असमानता भी दूर हो। तेज विकास दर के साथ लोगों के जीवन में खुशहाली भी आनी चाहिए। रोजगार के अवसर बढ़ने से ही समाज में खुशहाली आ सकती है। जब देश में रोजगार के मौके बढ़ेंगे तो समाज में वास्तविक समृद्धि आ सकती है। रोजगार के अवसर बढ़ने से उत्पादकता बढ़ेगी और महंगाई पर नियंत्रण पाने में भी मदद मिलेगी। निस्संदेह, बढ़ती क्रय शक्ति भी अर्थव्यवस्था को गति देती है। निर्विवाद रूप से बेरोजगारी कम किए बिना हम देश के सौ साल पूरे होने तक विकसित भारत का लक्ष्य मुश्किल से हासिल कर पाएंगे। हमें एआई व डिजिटल चुनौती के मुकाबले के लिए युवाओं का कौशल विकास तेज करना चाहिए।

सड़क हादसे में युवक की मौत, मासूम की हालत नाजुक

न्यूज वाणी ब्यूरो

संदना, सीतापुर। जनपद अंतर्गत संदना थाना क्षेत्र में बीती रात एक भीषण सड़क हादसे ने खुशियों को मातम में बदल दिया। सिधौली मार्ग पर एक तेज रतार एक्सयूवी (ग्न्ट) कार ने दो युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में एक 18 वर्षीय युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई, जबकि एक 10 वर्षीय किशोर जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहा है। मदद करना पड़ा भारीरू कैसे हुआ हादसा? प्राप्त जानकारी के अनुसार, घटना 18 जनवरी की रात करीब 9रू30 बजे की है। ग्राम नसीराबाद निवासी मुन्नू के मुताबिक, पड़ोसी गांव नहोइया के संतोष अपनी खराब मोटरसाइकिल को खींचकर ले जा रहे थे। उन्होंने मुन्नू से मदद मांगी, जिस पर मुन्नू ने अपने पुत्र अभिनंदन (18 वर्ष) और भतीजे पिंकू (10 वर्ष) को मोटरसाइकिल में धक्का लगाने के लिए साथ भेज दिया। जैसे ही ये लोग करपन चौराहे के पास पहुंचे, सिधौली की ओर से आ रही अनियंत्रित कार ने उन्हें पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों युवक सड़क पर दूर जा गिरे और लहूलुहान हो गए। अस्पताल में तोड़ा दम स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए 108 एम्बुलेंस के जरिए दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (ब्ब्) सिधौली पहुंचाया। अभिनंदन की हालत नाजुक देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल सीतापुर रेफर कर दिया, लेकिन वहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। वहीं, 10 वर्षीय पिंकू का उपचार जारी है, जिसकी स्थिति अभी भी गंभीर बनी हुई है। पुलिस का बयान इस मामले में संदना थानाध्यक्ष अरविंद कुमार कटिया ने बताया किरू झ ष्फिलहाल पुलिस को अभी तक कोई लिखित तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। जैसे ही परिजनों की ओर से तहरीर मिलती है, वाहन और चालक के विरुद्ध आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस घटना के बाद से मृतक के परिवार में कोहराम मचा हुआ है और गांव में शोक की लहर है।

हिंदुत्व का हल्ला मचा रही भाजपा हिंदुत्व को दफन करने पर अमादा

न्यूज वाणी ब्यूरो

सीतापुर। प्रदेश अध्यक्ष कांग्रेस अजय राय के आवाहन पर आज जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा वाराणसी एतिहासिक मणि कर्णिका घाट 10 जनवरी को प्रदेश सरकार द्वारा ध्वस्त कर दिया गया है। सभी

को पता है कि इसका जीर्णोद्धार 1791 कराया गया था। स्थान वीरांगना अहिल्याबाई होलकर के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था। इस ध्वस्तीकरण के बाद अहिल्याबाई होलकर की मूर्तियां को मलवे मैं तब्दील कर भाजपा पूर्व के इतिहास को दफन कर झूठा इतिहास रचने का प्रयास कर रही है। पूर्व के देश हित में समर्पित एतिहासिक महान हस्तियों का अस्तित्व मिटाना लोकतंत्र के लिए बहुत बड़ा खतरा है। राहुल गांधी की अगुवाई में कांग्रेस इस तरह के तानाशाही रवैया के विरुद्ध सड़कों पर संघर्ष करेगी और भाजपा को इसका जवाब देना होगा। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा जिलाध्यक्ष डॉक्टर ममता वर्मा की अगुवाई में संगठन पदाधिकारियों के साथ राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन के माध्यम से भेजा गया। इस अवसर पर शिव प्रकाश सिंह जिला उपाध्यक्ष (संगठन प्रभारी), बकरीदी खान, ओंमकार नाथ मिश्र, अनिल दीवान, नरेंद्र वर्मा, अतुल भार्गव, सीताराम भार्गव, अनिल कुमार नंद, रामनिवास भार्गव, अनुपमा द्विवेदी, मीना मिश्रा, शबनम, हसीना खातून, हसीना अंसारी, विलाल सहित संगठन पदाधिकारी मौजूद रहे।

दर्दनाक सड़क हादसे में भाई-बहन की मौत

न्यूज वाणी ब्यूरो

डलमऊ, रायबरेली। हाल ही में डलमऊ कोतवाली क्षेत्र के पूरे कुंजन मजरे लूक चांदपुर गांव में हुए दर्दनाक सड़क हादसे में भाई–बहन की मौके पर मौत हो गई थी। इस हृदयविदारक घटना के बाद जहां पूरा परिवार गहरे सदमे में है, वहीं प्रशासन की ओर से संवेदनशील पहल देखने को मिली। खंड विकास अधिकारी अशोक सचान स्वयं पीड़ित परिवार के घर पहुंचे और शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया। इस दौरान उन्होंने 5000 की तात्कालिक आर्थिक सहायता प्रदान की और साथ ही भरोसा दिलाया कि पीड़ित परिवार को हर संभव सरकारी सहायता दिलाई जाएगी। इतना ही नहीं, परिवार की आजीविका को मजबूत करने के उद्देश्य से गांव में समूह की बैठक कराकर सामुदायिक शौचालय के केयरटेकर पद पर चयन कराने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है, जिससे संबंधित महिला को 6000 प्रतिमाह मानदेय मिलेगा। वहीं मृतक की मां का पहले से बना सफेद राशन कार्ड, अब अंत्योदय कार्ड में परिवर्तित कराने के लिए आवेदन भरवा दिया गया है। भारतीय जनता पार्टी के नेता अनुष्ठान सिंह जहाजी ने भी 5000 देकर परिवार को आश्वासन दिया हर हाल में तुम्हारे साथ रहूंगा इसके अलावा शौचालय लाभ योजना का फॉर्म भी सबमिट कराया गया है। आवास सर्वे पहले ही पूरा हो चुका है, और लक्ष्य मिलते ही परिवार को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया गया है। सबसे अहम बात यह है कि परिवार का जीरो पॉवर्टी श्रेणी में सर्वे दर्ज किया गया है। इस मानवीय पहल के दौरान ग्राम प्रधान मनोज कुमार, पंचायत सहायक शैलेंद्र कुमार और रोजगार सेवक श्याम किशोर भी मौके पर मौजूद रहे।

प्रेमी की ब्लैकमेलिंग से तंग आकर युवती ने खाया जहर

- अस्पताल पहुंचे आरोपी की भीड़ ने की जमकर धुनाई

न्यूज वाणी ब्यूरो

खैराबाद, सीतापुर। जनपद के खैराबाद थाना क्षेत्र में प्रेम प्रसंग और ब्लैकमेलिंग का एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने मानवता को शर्मसार कर दिया है। एक युवती ने अपने प्रेमी की प्रताड़ना और फोटो–वीडियो वायरल करने की धमकी से क्षुब्ध होकर जहरीला पदार्थ खा लिया। गंभीर हालत में युवती का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। वहीं, अपनी करतूतों पर पर्दा डालने अस्पताल पहुंचे आरोपी प्रेमी को भीड़ के गुस्से का सामना करना पड़ा। जानकारी के मुताबिक, मछरेहटा क्षेत्र की रहने वाली पीड़ित युवती का पवन (पुत्र राजकुमार) नामक युवक के साथ प्रेम संबंध था। परिजनों का आरोप है कि पिछले दो महीनों से पवन युवती को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर रहा था। आरोपी के पास युवती की कुछ तस्वीरें और वीडियो थे, जिन्हें वायरल करने की धमकी

देकर वह लगातार उसे ब्लैकमेल कर रहा था। इस दौरान उसने युवती का यौन शोषण भी किया। बीच सड़क पर हुआ हाई वोल्टेज ड्रामा घटना की शुरुआत खैराबाद चुंगी के पास हुई, जब आरोपी पवन ने युवती को रास्ते में रोक लिया। वह युवती पर जबरन अपने साथ चलने का दबाव बनाने लगा। देखते ही देखते दोनों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, विवाद इतना बढ़ा कि आरोपी युवक युवती का मोबाइल फोन छीनकर मौके से फरार हो गया। आहत युवती ने उठाया खौफनाक कदम लोकलाज के डर और प्रेमी की लगातार धमकियों से टूट चुकी युवती ने घर पहुंचकर जहरीला पदार्थ गटक लिया। हालत बिगड़ने पर परिजनों ने उसे आनन–फानन में जिला अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टरों के अनुसार, युवती की स्थिति फिलहाल नाजुक बनी हुई है। अस्पताल में आरोपी की पिटाई, पुलिस ने लिया हिरासत में हैरानी की बात तब हुई जब आरोपी पवन अपना चेहरा छिपाकर युवती का हाल जानने जिला अस्पताल पहुंच गया। वहां मौजूद परिजनों और स्थानीय लोगों ने उसे पहचान लिया, जिसके बाद लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। भीड़ ने अस्पताल परिसर में ही आरोपी की जमकर पिटाई कर दी। सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आरोपी को भीड़ से बचाकर हिरासत में लिया।

इनसेट–

आरोपी युवक पुलिस की हिरासत में है। परिजनों से तहरीर प्राप्त होते ही सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कठोर विधिक कार्रवाई की जाएगी– विनायक भोसले, सीओ सिटी।

मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर राजनीतिक दलों की बैठक

- एसडीएम ने नए मतदाताओं को जोड़ने पर दिया जोर

न्यूज वाणी ब्यूरो

सीतापुर, लहरपुर। लोकतंत्र के महापर्व में हर पात्र नागरिक की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन ने कमर कस ली है। सोमवार को लहरपुर तहसील सभागार में उप जिलाधिकारी आकांक्षा गौतम की अध्यक्षता में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। बैठक का मुख्य केंद्र बिंदु विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान के तहत छूटे हुए मतदाताओं और 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवाओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज करना रहा। एसडीएम आकांक्षा गौतम ने स्पष्ट किया कि जो मतदाता पुनरीक्षण अभियान में छूट गए हैं, उन्हें भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित 13 दस्तावेजों की सूची में से किन्हीं दो साक्ष्यों को प्रस्तुत करना होगा। मुख्य दस्तावेजों में सक्षम अधिकारी द्वारा जारी जन्म प्रमाण पत्र या पासपोर्ट, मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रमाण पत्र, स्थाई निवास प्रमाण पत्र या परिवार रजिस्टर की नकल, केंद्र/राज्य सरकार या सार्वजनिक उपक्रम द्वारा जारी पहचान पत्र/पेंशन कार्ड, भूमि या मकान आवंटन के सरकारी प्रमाण पत्र शामिल है। एक दिन में 1250 नए आवेदन उप जिलाधिकारी ने बैठक में बताया कि रविवार को चलाए गए विशेष अभियान के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। फॉर्म 6 (नए मतदाता) के 1250 आवेदन, फॉर्म 7 (नाम विलोपन) के 20 आवेदन, फॉर्म 8 संशोधन के 160 लोगों ने सुधार हेतु आवेदन किया। एसडीएम ने सभी दलों के प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वे अपने स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करें ताकि 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हर युवा का फॉर्म 6 भरवाया जा सके। इस अवसर पर भाजपा से रामे बाजपेई, अपना दल (एस) के विधानसभा अध्यक्ष दिनेश पटेल, सपा नगर अध्यक्ष मेराज महबूब, कांग्रेस जिला महामंत्री कन्हैया

मेहरोत्रा, और बसपा से आरिफ अंसारी सहित निर्वाचन विभाग के कर्मचारी संदेव कुमार, ओमप्रकाश व रामू वर्मा उपस्थित रहे।

400 मी0 दौड़ को जिलाध्यक्ष ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

न्यूज वाणी ब्यूरो

मऊ। मेरा युवा भारत केंद्र मऊ के तत्वाधान में डॉ भीमराव अंबेडकर स्पोर्ट्स स्टेडियम में दो दिवसीय जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि रामाश्रय मौर्य बीजेपी जिलाध्यक्ष ने 400 मी0 दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस प्रतियोगिता में सभी ब्लॉक के विजेता एवं उप विजेता टीम जनपद स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में उत्साहित के साथ प्रतिभाग किया। 400 मी0 महिला दौड़ में भारत शिवांगी कन्नौजिया प्रथम, श्रेया यादव द्वितीय एवं अन्नू राजभर तृतीय रहे। जिलाध्यक्ष ने टीमों से परिचय प्राप्त किया एवं उन्होंने कहा कि खेल जीवन का मुख्य अंग हो गया है पहले ये कहा जाता था कि खेलोगे कूद तो होगे खराब लेकिन अब खेल जगत से हर विभाग में

कोटा निर्धारित कर दिया गया है। ऊंची से ऊंची मंजिल प्राप्त कर सकते है। डीपी सिंह जिला खेल अधिकारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि खेल से ही अपने जीवन को बेहतर बना सकते है, राशि मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज अपने जिले के खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर नाम कर रहे है और साथ हो साथ जनपद का नाम बढ़ा रहे है 400मी पुरुष दौड़ में क्रिस राजभर प्रथम, नितेश यादव द्वितीय एवं गणेश निषाद तृतीय रहे।महिला लंबी कूद में शारदा भारद्वाज प्रथम, शीतल द्वितीय एवं खुशी गोंड तृतीय स्थान प्राप्त की। लंबी कूद बालक वर्ग में अर्जुन राजभर प्रथम, सत्यम निषाद द्वितीय एवं अभिमन्यु राजभर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बॉलीबॉल में धीरज चौहान कोपागंज की टीम ने प्रथम स्थान एवं शराफत अली परदहा के टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महिला कब्बड्डी टीम में बीबीपुर ने प्रथम स्थान एवं कोपागंज ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बालक वर्ग कबड्डी टीम में रानीपुर ने प्रथम स्थान एवं परदहा की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। डीसीएस के प्रोफेसर सर्वे पाण्डेय खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि खेल जगत से आप भी मंजिल को प्राप्त कर सकते है। इसी क्रम में सचिन सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवा वर्ग की काफी भूमिका है। इसी क्रम में सामाजिक कार्यकर्ता अर्जुन कुमार, लेखा लिपिक नवीन कुमार सिंह, रजनीश, हरिप्रसाद मुरारी पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक, योगेश कुमार, अभिषेक कुमार, सोनम मौर्या, केदार राम, ओमकार सिंह, प्रतीक, अजय सिंह, अनिल सिंह, योगेश सिंह कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

तंबाकू मुक्तपुलिस बल की दिशा में बड़ा कदम

- 500 ट्रेनी पुलिसकर्मियों ने ली शपथ

न्यूज वाणी ब्यूरो

मऊ। तंबाकू नियंत्रण को लेकर एक सशक्त और प्रेरणादायी पहल देखने को मिली, जहाँ कानून के रखवालों को तंबाकू के दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए स्वस्थ समाज के निर्माण का संदेश दिया गया। जनपद में राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत पुलिस लाइन परिसर में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के जिला सलाहकार डॉ. अश्विनी कुमार सिंह ने लगभग 500 ट्रेनी पुलिस कर्मियों को कोटपा अधिनियम 2003 की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. सिंह ने अपने संबोधन में तंबाकू सेवन से होने वाले गंभीर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार तंबाकू कई जानलेवा बीमारियों की जड़ है। साथ ही उन्होंने पुलिसकर्मियों से कानून के साथ–साथ समाज में जागरूकता फैलाने की अपील की। साथ ही कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित समस्त ट्रेनी पुलिस कर्मियों ने तंबाकू का सेवन न करने और दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने की शपथ ली। इस जागरूकता कार्यक्रम में सीओ दिनेश दत्त मिश्रा, आर.आई. अरुण कुमार सिंह, एस. आई. इंद्रजीत पटेल, यूपी वीएच लखनऊ से दिलीप कुमार पांडेय, तंबाकू नियंत्रण प्रकोष्ठ मऊ से काउंसलर वीरेंद्र यादव, सोशल वर्कर लक्ष्मीकांत दुबे एवं कंप्यूटर ऑपरेटर सतीश गुप्ता सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सभी प्रतिभागियों ने सराहा और इसे तंबाकू मुक्त समाज की दिशा में एक अहम कदम बताया।

गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर एडीएम ने ली बैठक

- संबंधित अधिकारियों को निर्धारित किए उनके दायित्व

न्यूज वाणी ब्यूरो

मऊ। अपर जिलाधिकारी सत्यप्रिय सिंह की अध्यक्षता में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाए जाने की तैयारियों को लेकर बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी द्वारा समस्त खंड विकास अधिकारी, समस्त अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत को निर्देशित किया गया कि 26 जनवरी के पूर्व संध्या पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के स्मारकों, शहीद स्मारकों की सूची बनाकर साफ सफाई एवं 26 जनवरी को माल्यार्पण कराना सुनिश्चित करेंगे। जिला क्रीड़ाधिकारी एवं युवा कल्याण अधिकारी को निर्देशित किया गया कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर साइकिल रेस का कार्यक्रम कराएंगे। जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए गए कि सभी विद्यालयों में प्रार्थना सभा, झंडारोहण प्रभात फेरी का कार्यक्रम कराएंगे। अधिशासी अधिकारी नगर पालिका, समस्त अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत, जिला पंचायत राज अधिकारी एवं सभी खंड विकास अधिकारी को निर्देशित किया गया कि मऊ नगर की सभी मलिन बस्तियों की साफ सफाई एवं नगर पंचायत तथा समस्त ग्राम पंचायतों में संबंधित अधिकारी साफ सफाई का कार्यक्रम करना सुनिश्चित करेंगे। जिला प्रोबेशन अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जिला बाल कारागार में फल वितरण कराएंगे। समस्त उप जिलाधिकारी एवं समस्त तहसीलदार गणतंत्र दिवस के अवसर पर निराश्रित, निर्बल, असहाय व्यक्तियों को निशुल्क कंबल वितरण करेंगे तथा मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं जेल अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि जिला अस्पताल तथा जिला कारागार में फल वितरण अनिवार्य रूप से करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी कर्मचारी अपने कार्यालय पर अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर झंडारोहण कार्यक्रम में प्रतिभा करेंगे। बैठक के दौरान जिला विकास अधिकारी उमेश चंद तिवारी, वन अधिकारी, नगर मजिस्ट्रेट, नगर क्षेत्राधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

खानकाह-ए-कलीमिया में उर्स के तीसरे दिन हुई चादर पोशी

- अकीदतमंदों ने बड़े एहतराम के साथ शिरकत की

न्यूज वाणी ब्यूरो /मीरानपुर कटरा, शाहजहांपुर। बाद नमाज ए असर खानकाह के पिराने उज्जाम हजरत सैय्यद कासिम अली कलीमी रह0 अलेह के आस्ताने पर सज्जादानशीन हजरत सैय्यद आदिल महमूद कलीमी की सदारत में कव्वालो के साथ चादर पोशी की गई। ओढ़ो ओढ़ो रे चदरिया मैं लाई तुमरे कारण। मुरीद जायरीनों ने पिराने उज्जाम की मजारात पर गुलपोशी कर हाजरी दी। इस दौरान चादरपोशी के कार्यक्रम में प्रमुख रूप से हजरत सैय्यद सरवर महमूद कलीमी उर्फ एहसाम मियां, हजरत सैय्यद शाकेब मियां चिश्ती अल अजहरी गद्दीनशीन दरगाह अजमेर शरीफ, हजरत अल्लामा मौलाना फजले रसूल मोहम्मद अज्जाम मियाँ कादरी बदायूँनी, हजरत शाह यूसुफ अहमद अहमदी रुदौली शरीफ, हजरत सैय्यद नवाज अख्तर चिश्ती मियां, हजरत सैय्यद मंजर मियां चिश्ती हजरत सैय्यद गजाली मियाँ चिश्ती फफूंद शरीफ, मौलाना जिलानी कादरी अजहरी, मौलाना जमीर कादरी, कारी फरमान कादरी, इमाम जमील अख्तर, हाफिज नवी हसन बरकाती, हाजी सगीर खान, मोहम्मद इमरान

हुसैन, आदि गणमान्य नागरिक सहित मुरीद जायरीन उपस्थित रहे।

रिटायर्ड लेखपाल के घर डकैती, रहम में लौटाई रिवॉल्वर पर ले उड़े कारतूस

न्यूज वाणी ब्यूरो

तालगांव, सीतापुर। जनपद के तालगांव थाना क्षेत्र में रविवार तड़के बदमाशों ने खौफनाक वारदात को अंजाम दिया। हथियारबंद डकैतों ने एक रिटायर्ड लेखपाल के घर को निशाना बनाते हुए पूरे परिवार को बंधक बना लिया और करीब 20 लाख रुपये की संपत्ति पार कर दी। वारदात में सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि बदमाशों ने लूट की रिवॉल्वर तो वापस कर दी, लेकिन उसकी गोलियां साथ ले गए। तड़के 3 बजे दीवार फांदकर घुसे 6 हथियारबंद बदमाश घटना तालगांव इलाके के उस मकान की है जहाँ रिटायर्ड लेखपाल अमर वर्मा के दो बेटे, पुष्कर और अजय वर्मा, अपने परिवारों के साथ रहते हैं। रविवार सुबह करीब 3 बजे, जब पूरा परिवार गहरी नींद में था,

तभी 6 से अधिक नकाबपोश बदमाश दीवार फांदकर घर में दाखिल हुए। बदमाशों ने असलहे की नोंक पर परिजनों को एक कमरे में बंधक बना लिया और चीखने–चिल्लाने पर जान से मारने की धमकी दी। लाखों के जेवरात और नकदी पर हाथ साफ बदमाशों ने घर के कोने–कोने की तलाशी ली और अलमारियों के ताले तोड़कर नकद राशि 7 लाख रुपये, जेवरात करीब 13 लाख मूल्य के सोने–चांदी के गहने, कुल लगभग 20 लाख रूपए का माल पार कर दिया। लूटपाट के दौरान बदमाशों को घर में रखी एक लाइसेंसी रिवॉल्वर मिली। पीड़ित परिवार ने जब बदमाशों से मिन्नतें कीं, तो डकैतों ने एक अजीब दरियादिली दिखाई। उन्होंने रिवॉल्वर तो परिवार को वापस सौंप दी, लेकिन उसमें लगी सभी कारतूस निकाल लिए और उन्हें अपने साथ ले गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक भारी बल और फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे। शुरुआती जांच में पुलिस को किसी भेदी (करीबी व्यक्ति) के शामिल होने का प्रबल संदेह है, क्योंकि बदमाशों को घर की भौगोलिक स्थिति और कीमती सामान के रखे होने की सटीक जानकारी थी। एसपी ने मामले के खुलासे के लिए पुलिस की चार अलग–अलग टीमें लगाई गई हैं। इलाके के मोबाइल टावरों की डंप डेटा और संदिग्ध नंबरों की कॉल डिटेल्स खंगाली जा रही हैं। पुलिस ने शक के आधार पर कुछ करीबियों और पुराने अपराधियों को हिरासत में लिया है।

जनहित के मुद्दों को लेकर आप ने किया धरना प्रदर्शन

न्यूज वाणी ब्यूरो

मऊ। आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष विक्रम जीत सिंह के नेतृत्व में जनहित से जुड़े गंभीर मुद्दों को लेकर धरना–प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन के उपरांत प्रशासन को जगाने हेतु एक ही दिन में कुल 6 अलग–अलग ज्ञापन एसडीएम मऊ के माध्यम से संबंधित अधिकारियों को सौंपे गए। सबसे पहले, वाराणसी में हिंदू देवी–देवताओं की मूर्तियों को तोड़े जाने की घटनाओं को लेकर राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली घटनाओं पर कड़ी नाराजगी जताते हुए दोषियों पर तत्काल व कठोर कार्रवाई की मांग की गई। इसके बाद जिलाधिकारी के नाम ज्ञापन सौंपते हुए ग्राम दुर्जेपुर (ब्लॉक रानीपुर), ग्राम नसीरपुर एवं ग्राम सरयां (ब्लॉक परदहा) में ग्राम प्रधानों एवं संबंधित अधिकारियों की मिलीभगत से व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार, बिना कार्य कराए सरकारी धन की निकासी, सड़कों, पोखरों एवं अन्य विकास कार्यों में भारी अनियमितताओं की निष्पक्ष जांच की मांग की गई। इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक के नाम दो अलग–अलग ज्ञापन सौंपे गए। पहले ज्ञापन में यातायात पुलिस द्वारा खुलेआम किए जा रहे भ्रष्टाचार, आम नागरिकों और वाहन चालकों के उत्पीड़न पर रोक लगाने की मांग की गई। दूसरे ज्ञापन में माझवारा पुलिस चौकी को थाना बनाए जाने की पुरजोर मांग रखते हुए कहा गया कि क्षेत्र की बढ़ती आबादी और आपराधिक घटनाओं को देखते हुए यह अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, घोसी लोकसभा सांसद राजीव राय को भी दो अलग–अलग ज्ञापन सौंपे गए। पहले ज्ञापन में छोटी कम्हरिया में रेलवे अंडरपास निर्माण की मांग की गई, जिससे क्षेत्रवासियों को लंबे समय से चली आ रही गंभीर समस्या से राहत मिल सके। दूसरे ज्ञापन में डुमराव गांव में सड़क निर्माण कराए जाने की मांग उठाई गई, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में हो रही कठिनाइयों से निजात मिल सके। इस अवसर पर आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष विक्रम जीत सिंह ने कड़े शब्दों में कहा कि जनपद में भ्रष्टाचार और प्रशासनिक उदासीनता चरम पर है। जनता की समस्याओं को लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है। यदि इन सभी ज्ञापनों पर गंभीरता से जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई नहीं हुई, तो आम आदमी पार्टी जनपद स्तर पर बड़ा और निर्णायक जनआंदोलन करने के लिए बाध्य होगी। आम आदमी पार्टी ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यह संघर्ष जनहित में है और जब तक न्याय नहीं मिलेगा, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

मौसम में बदलाव आंखों के लिए खतरनाक : डॉ संजय

- डुमराव हरिजन बस्ती में 72 मरीजों की निःशुल्क जांच

न्यूज वाणी ब्यूरो /मऊ। मौसम में नित्यप्रति हो रहे बदलाव का सीधा असर आंखों पर पड़ेगा। इससे बचाव के लिए आंख रोगियों को नियमित रुप से अपनी जांच कराना आवश्यक है। यह मौसम आंखों के साथ हृदय रोगियों के लिए भी घातक होगा। आगामी 25 जनवरी को शारदा नारायण हास्पिटल में आंखों की निःशुल्क आपरेशन किया जाएगा। मौसम में नित्यप्रति हो रहा बदलाव स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है। तापमान के उतार–चढ़ाव में हृदय रोगियों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। वृद्ध और नवजात बच्चों को विशेष खतरा बना रहता है। हार्ट अटैक होने की संभावना बढ़ जाती है। सांस रोगियों के लिए भी यह मौसम खतरनाक हो जाता है। इसके साथ ऐसे मौसम में संक्रमण रोग तेजी से फैलता है। आक्समिक परेशानी होते ही तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ संजय सिंह ने यह उदगार रविवार को डुमरांव हरिजन बस्ती में आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर में बोल रहे थे। कार्यक्रम संयोजक पूर्व प्रधान यशपाल सिंह के नेतृत्व में 72 मरीजों की जांचकर दवाओं का वितरण किया गया।

फतेहपुर के डा. जमाल चर्मे वालों की मशहूर दुकान
फैसल चर्मे वाले
(साइन्टिफिक आप्टीशियन)
किशनपुर रोड, चौड़ा खेर गली के अन्दर, शिब्बू मोबाइल के बगल में, मस्जिद के नीचे पहुंच गई है।
(जापानी कम्प्यूटर द्वारा आंखों की जाँच)
हमारे यहाँ पर आखों की जाँच करके नज़र व धूप के चश्में बनायें जाते है।
नोट- सरदर्द, आँखों में दर्द, मोतिया बिन्द, समलबाई, धुन्ध, आपरेशन आँख दूर व पास के अक्षर साफ न दिखाई देने पर साइन्टिफिक आप्टीशियन द्वारा आँखों की जाँच करके नज़र व धूप के चश्में बनाये जाते है व साफट कान्टेक्ट लेन्स लगायें जाते है एवं कान की मशीन भी उपलब्ध है।
नोट- मोतिया बिन्द के आपरेशन व आँखों के अन्य आपरेशनों के साथ-साथ लैसिक द्वारा चश्मा हटवाने के लिए सम्पर्क करें। आँख के अन्दर (I.O.L.) लेन्स लगवाने के 21 दिन बाद अवश्य चश्मा लगवा लें वरना रोशनी कम होने का खतरा बना रहता है।
फैसल चर्मे वाले
किशनपुर रोड, चौड़ाखेर गली के अन्दर, शिब्बू मोबाइल के बगल में, मस्जिद के नीचे, खागा-फतेहपुर
डा. जमाल अहमद जी.टी. रोड, फतेहपुर MBBS. (H) P.M.P
हाजी खलीक़ अहमद जाफरी सम्पादक कारवाने हक 9415065213
एफ.ए.जाफरी D.R. (Opt.) 7379440876

खदान कर्मी से रंगदारी मांगने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

न्यूज वाणी ब्यूरो

बांदा। पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल के कुशल निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने हेतु की जा रही कार्यवाही के क्रम में थाना पैलानी पुलिस द्वारा स्वयं को तथाकथित बताकर खदान संचालक से रंगदारी मांगने वाले अभियुक्त को गिरतार कर लिया गया है।

गौरतलब हो कि थाना पैलानी क्षेत्र के ग्राम खप्टिहाकला के रहने वाले अर्जुन सिंह पुत्र लक्ष्मी सिंह ने 18 जनवरी को थाना पैलानी पर सूचना दी कि 17 जनवरी की शाम को ग्राम खप्टिहाकला का ही रहने वाला पवन पुत्र रामप्रकाश अपने आपको तथाकथित पत्रकार बताकर कहा कि तुम साड़ी खदान के लिए काम करते हो और 50 हजार रुपए या प्रतिदिन 500 रुपए की मांग करते हुए वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में वायरल करने की ध मकी दी गई तथा पूर्व में कई बार साड़ी खदान जाकर वीडियो बनाकर रंगदारी वसुलने की कोशिश कर चुका है। जिसके सम्बन्ध में थाना पैलानी पर अभियोग पंजी.त करते हुए अभियुक्त को मुखबिर की सूचना पर पपरेंदा रोड अलोना नगर पुलिया के पास से गिरतार कर मा0 न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर जेल भेजा गया। पकड़े गए अभियुक्त पवन पुत्र रामप्रकाश निवासी खप्टिहांकला थाना पैलानी के विरुद्ध मु0अ0सं0– 17/26 धारा 352, 351(3), 308(5) बीएनएस थाना पैलानी में अभियोग दर्ज किया गया। पकड़ने वाली पुलिस टीम में राजेश कुमार वर्मा प्र0नि0, उ0नि0 लल्लन प्रसाद सिंह कां0 धीरेन्द्र सिंह शामिल रहे।

हिन्दू सम्मेलन में पधारे पूज्य धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री

न्यूज वाणी ब्यूरो

बांदा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा हिन्दू सम्मेलन का आयोजन चिल्ला रोड स्थित होटल रामदा में किया गया जिसमें हजारों की संख्या में स्वयंसेवक बंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि धीरेन्द्र .ष्ण शास्त्री एवं विशिष्ट अतिथि प्रांत प्रचारक श्रीराम जी के द्वारा भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि तथा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रांत प्रचारक श्रीराम जी ने संघ 100 वर्षों की यात्रा पर प्रकाश डालते हुए हिंदुओं के संगठित रहने की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य अतिथि धीरेन्द्र शास्त्री जी ने हिंदुओं से जाति बिरादरी से ऊपर उठकर समाज में समरसता बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि जातियां पहले भी थीं, पर जातिवाद नहीं था। आज जितनी जातियां नहीं है उससे ज्यादा जातिवाद है। उन्होंने कहा कि हिंदुओं को जनसंख्या बढ़ाने तथा बच्चों को नौकरी–व्यापार के साथ संस्कार देने की आवश्यकता है। उन्होंने स्वयंसेवकों को पवित्र सनातन धर्म, संस्ति एवं समाज की सदैव रक्षा करने हेतु शपथ भी दिलाई। कार्यक्रम के दौरान सह–प्रांत प्रचारक मुनिश, विभाग प्रचारक ऋतुराज, विभाग कार्यवाह संजय, सुरेंद्र, श्यामसुंदर, अनुराग, रामनाथ, उमाशंकर सहित हजारों स्वयंसेवक उपस्थित रहें। संचालन श्याम निगम ने किया।

मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने किया जनसंपर्क

न्यूज वाणी ब्यूरो

बांदा। मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेश दीक्षित ने गांवों में किया जनसंपर्क मनरेगा मजदूरों को डेढ़ साल से भुगतान नहीं हुआ है व गांवों में रोजगार नहीं मिल रहा है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय पूर्व मंत्री के निर्देश पर चलाए जा रहे मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेश दीक्षित का कार्यक्रम दूसरे दिन भी जारी रहा। सोमवार को उन्होंने ब्लॉक के गांवों में पहुंचकर ग्रामीणों से संवाद किया और मनरेगा कानून को बचाने के लिए सहयोग की अपील की। मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत आज ब्लॉक व मण्डल बड़ोखरखुर्द के ग्राम पंचायत डिंगवाही में तथा महुआ ब्लॉक के नगनेधी मण्डल के ग्राम पंचायत तिंदुही (रहुसत) में कांग्रेस जिलाध यक्ष राजेश दीक्षित ने लोगों को चौपाल लगाकर जागरूक किया व उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा भेजे गए मनरेगा बचाओ संग्राम के पत्र मजदूरों को वितरित किए गए। मनरेगा बचाओ संग्राम कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेश दीक्षित ने कहा कि मनरेगा रोजगार की गारंटी देने वाला कानून है, जिसे केंद्र की भाजपा सरकार कमजोर कर रही है। कांग्रेस सरकार

के समय इस कानून के तहत 100 दिन के रोजगार की गारंटी और मजदूरी नहीं मिलने पर बेरोजगारी भत्ता देने का प्रावधान था, जिसे अब समाप्त कर दिया गया है। इसके स्थान पर नई योजना लागू कर दी गई है, जिसमें काम का चयन और योजना का क्षेत्र दिल्ली से तय होगा, जबकि पहले गांव स्तर पर यह निर्णय लिया जाता था। उन्होंने यह भी कहा कि पहले मनरेगा में मजदूरी का पूरा भुगतान केंद्र सरकार करती थी, लेकिन अब केंद्र सरकार प्रति रुपए में केवल 60 पैसे का योगदान कर रही है, जिससे योजनाओं और रोजगार पर सीधा असर पड़ रहा है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेश दीक्षित ने बताया कि वर्तमान में क्षेत्र की पंचायतों में 50 से भी कम मजदूर कार्यरत है, जो बेहद चिंताजनक है। साथ ही मनरेगा मजदूरों को पिछले डेढ़ साल से भुगतान नहीं मिला है, जिससे उनके सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। ग्रामीणों को संबोधित करते हुए आगे कहा कि कांग्रेस पार्टी आपके अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही है और मनरेगा कानून को बचाने के लिए सभी को आगे आना होगा। भाजपा सरकार गरीब, मजदूर, किसान व युवा विरोध ी है।ष् उन्होंने ग्रामीणों से मनरेगा बचाओ संग्राम को समर्थन देने और अपने हक की लड़ाई में एकजुट होने का आह्वान किया। इस दौरान गांव गांव में ग्रामीणों ने कांग्रेस जनों का गर्मजोशी से स्वागत किया। मनरेगा बचाओ संग्राम कार्यक्रम के दौरान जिला महासचिव कालीचरण निगम, राजेन्द्र गर्ग नाती, कंट्रोल रूम प्रभारी बी लाल भाई, बांदा कांग्रेस सोशल मीडिया जिलाध्यक्ष सन्तोष कुमार द्विवेदी, ब्लॉक व मण्डल बड़ोखरखुर्द के ग्राम पंचायत डिंगवाही में ब्लॉक अध्यक्ष जयकरन सिंह राजपूत, मण्डल अध्यक्ष .ष्णदेव राजपूत, काशी प्रसाद सिंह, संतोष कुमार राजपूत, नत्थू प्रसाद, अजीत कुमार, अनुरुद्ध प्रताप सिंह, नरेन्द्र सोनी, अशोक कुमार, इंद्रपाल, दिनेश, मिथलेश कुमार, रामपाल, कमता प्रसाद, ब्रजमोहन, रवी, सतानंद, राजेश, राजेन्द्र प्रसाद, नरेन्द्र, ओमप्रकाश, ब्लॉक महुआ के नगनेधी मण्डल के ग्राम पंचायत तिंदुही(रहुसत) में कार्यक्रम के अध्यक्ष लल्लू भाई, नत्थू वर्मा, नारायणदास, रमेश साहू, रामफल, गरीबदास, मझला, छोटेलाल, जगमोहन, रामप्रसाद, चुनबाद, सिपाहीलाल, राजकुमार, सोहनलाल, मोहनलाल, मोतीलाल, शिवरतन, दलपत, अनूप कुमार, दयाराम, महेश, मिथलेश, विकास, अभय, कमला देवी, शान्ती देवी, सुनीता, सुमित्रा देवी सहित भारी संख्या में लोग व कांग्रेस जन मौजूद रहे।

हनुमंत कथा के चौथे दिन श्रद्धा भाव का दिखा अद्भुत संगम

– बागेश्वर धाम सरकार के सानिध्य में पांच दिवसीय चल रही हनुमंत कथा

न्यूज वाणी ब्यूरो

बांदा। जनपद के मावई बाईपास चौराहा स्थित कथा स्थल पर इन दिनों भक्ति की अविरल धारा बह रही है। बागेश्वर धाम सरकार के सानिध य में आयोजित इस भव्य पांच दिवसीय हनुमंत कथा के चतुर्थ दिन श्रद्धा और विश्वास का ऐसा अद्भुत संगम देखने को मिला कि पूरा क्षेत्र रसमय और राममय हो गया। कथा के चौथे दिन व्यास पीठ से बरसे ज्ञान और भक्ति के अमृत ने हजारों श्रद्धालुओं को भाव–विभोर कर दिया, जिससे पंडाल के अंदर और बाहर चारों ओर केवल भक्तों का अपार जनसैलाब ही नजर आ रहा था। इस पावन बेला पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वालों में राज्यसभा सांसद श्री बाबूराम निषाद, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्री देवेश कोरी, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती कमलावती सिंह और शिक्षक एमएलसी श्री बाबू लाल तिवारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। इनके साथ ही श्री अनुराग जी (जिला प्रचारक), श्री संतोष जी (प्रांत कार्यालय प्रभारी), दिव्य प्रेम सेवा मिशन से श्री आशीष जी और किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री शिवशंकर सिंह ने भी कथा श्रवण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। ष्कार्यक्रम की भव्यता को और बढ़ाते हुए हमीरपुर की जिलाध्यक्ष श्रीमती शकुंतला निषाद, चित्रकूट के चेयरमैन श्री नरेंद्र गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सुनील पटेल और उनके साथ आए सभी सम्मानित जिला पंचायत सदस्यों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। साथ ही कॉपरेटिव बैंक के चेयरमैन श्री पंकज गुप्ता, पूर्व विधायक श्रीमती अंबरेश कुमारी, लोकसभा प्रत्याशी श्री मयंक द्विवेदी तथा पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती अंशु रमेश शिवहरे सहित जनपद की अनेक प्रतिष्ठित विभूतियाँ कथा स्थल पर मौजूद रहीं। मावई बाईपास चौराहे से लेकर पूरे कथा स्थल तक का माहौल जयकारों से गुंजायमान रहा और हजारों की संख्या में आए सम्मानित भक्तगणों ने इस आध्यात्मिक महोत्सव में शामिल होकर अपना जीवन धन्य किया।

व्यापार प्रतिनिधि मंडल कस्बा रुपईडीहा में चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न

न्यूज वाणी ब्यूरो

रुपईडीहा, बहराइच। भारत नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र नगर पंचायत कस्बा रुपईडीहा में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल का बहुप्रतीक्षित चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। बताते चलें कि चुनाव करवाने सम्मानित गणमान्य व्यापारियों एवं नागरिकों द्वारा निष्पक्ष करवा गया चुनाव करवाने में मोहम्मद शकील अहमद सिद्दीकी, व्यापार संघ पूर्व महामंत्री संजय बंसल, मनीराम शर्मा, शेर सिंह कसौधन अजय मित्तल एडवोकेट विवेक शुक्ला, आचार्य दयाशंकर शुक्ल, संतोष शुक्ल, दिवाकर पाठक, इरशाद हुसैन, महबूब अहमद, जफर इमाम रिजवी, राजा इमाम रिजवी, योगदान रहा और उसी दिन शाम को नतीजे घोषित कर दिए गए। अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष सहित कुल 11 सदस्य पदों के लिए हुए इस चुनाव में 26 उम्मीदवार मैदान में थे। शांतिपूर्ण मतदान के बाद हुई मतगणना में सभी पदों के परिणाम स्पष्ट हो गए। अध्यक्ष पद के लिए दो उम्मीदवारों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। शैलेश जयसवाल (कार) को 465 मत मिले और उन्होंने जीत दर्ज की। योगेंद्र शर्मा (ताला) को 332 मत मिले। महामंत्री पद पर भी दो प्रत्याशियों में सीधी भिड़ंत रही। संतोष अग्रवाल (पतंग) ने 499 मत पाकर विजय हासिल की। शाहिद हाशमी (मोटरसाइकिल) को 289 मत प्राप्त हुए। कोषाध्यक्ष पद पर मुकाबला काफी दिलचस्प रहा। सोनू कौशल (घड़ी) ने 464 मत पाते हुए जीत दर्ज की। गुलाम वारिस (एरोप्लेन) को 330 मत मिले। सदस्य पद के 11 सीटों के लिए कुल 22 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें से ऋषभ कौशल (कैंची) 569, शिवम गुप्ता (तीर) 567, आदर्श जायसवाल (बोतल) 529, बसंत चक्रवर्ती (केला) 476, राजू अग्रवाल (शिलाई मशीन) 450, श्याम पंसारी

(अंगूर) 432, खेसाल फारूकी (कंघा) 404, विजय जायसवाल (गमला) 396, मो. यूसुफ (चश्मा) 382, मनीष अग्रवाल (इंजन) 375, महेंद्र जायसवाल (तराजू) 374 विजयी रहे। निखिल शर्मा (कैमरा) 372, मो. जाकिर (जग) 359, अंकुर अग्रवाल (कप प्लेट) 357, प्रतीक मित्तल (नल) 341, मो. नसीम (पेड़) 315, रवि कुमार (किताब) 315, मोईनुद्दीन पुद्दन (कुर्सी) 312, इमरान (चाभी) 263, मो. अराफात (ट्रैक्टर) 261, सुशील तुलसियान (आम) 222, कन्हैया लाल गुप्ता (छाता) 234 को पर्याप्त मत नहीं मिले। चुनाव अधि ाकारियों ने बताया कि मतगणना पूर्ण पारदर्शिता एवं शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न कराई गई। नई कार्यकारिणी के गठन के साथ व्यापारी संगठन की गतिविधियों में नई गति आने की उम्मीद जताई जा रही है।

सुलहवार्ता के माध्यम से वादों का होगा निस्तारण

न्यूज वाणी ब्यूरो

बहराइच। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष/जनपद न्यायाध ीश राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में 01 जनवरी से 31 मार्च तक त्रैमासिक विशेष मध्यस्थता अन्तर्गत द्वितीय चरण का अभियान संचालित कर राष्ट्र हित में सुलह समझौते के आधार पर अधि ाक से अधिक मुकदमों का निस्तारण कराया जायेगा। अभियान अन्तर्गत निस्तारित होने वाले वादों से वादी व प्रतिवादी दोनों पक्ष लाभान्वित होंगे। यह जानकारी देते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विराट शिरोमणि ने बताया कि तीन महीने तक चलने वाले विशेष मध्यस्थता अभियान अन्तर्गत 01 जनवरी से 31 मार्च तक पत्रावलियों को चिन्हित कर मध्यस्थता केन्द्र भेजा जाएगा। सचिव श्री शिरोमणि ने बताया कि मध्यस्थता केन्द्र में वैवाहिक विवाद के मामलें, दुर्घटना दावे, घरेलू हिंसा, चेक बाउन्स, वाणिज्यिक विवाद, सेवा विवाद, शमनीय आपराधिक मामले, उपभोक्ता विवाद, ऋण वसूली, सम्पत्ति के बंटवारे, बेदखली, भूमि अधिग्रहण, उपभोक्ता फोरम सहित अन्य उपयुक्त दीवानी मामलों को अधि ाकाधिक संख्या में चिन्हित कर उन्हें मध्यस्थता हेतु मध्यस्थता एवं सुलह समझौता केन्द्र में संदर्भित किया जाएगा जिससे कि सुलह समझौता केन्द्र में कार्यरत मध्यस्थ द्वारा पक्षकारों के मध्य सुलहवार्ता के माध्यम से सन्दर्भित मामलों का निस्तारण कराया जा सके।

हत्या के मुकदमे का वांछित 24 घंटे में गिरफ्तार, आलाकत्ल बरामद

न्यूज वाणी ब्यूरो

बहराइच। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध की रोकथाम एवं वाँछित अपराधियों की गिरतारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) दुर्गा प्रसाद तिवारी व क्षेत्राधिकारी नानपारा

पहुप सिंह के कुशल निर्देशन व अपराध निरीक्षक गणेश तिवारी के कुशल नेतृत्व में उ0नि0 सर्वेशचन्द मय पुलिस बल द्वारा थाना स्थानीय पर पंजी.त मु0अ0सं0 014/2026 धारा 103(1) बीएनएस से संबंधित अभियुक्त दूबर खाँ पुत्र ईमामी खाँ निवासी नरैनापुर दा0 रामपुर हुसैनबक्श थाना रुपईडीहा 55 वर्ष को गिरतार किया गया। 19 जनवरी को अभियुक्त दूबर उपरोक्त जो कही भागने की फिराक में था। मुखबिर खास की सूचना पर समय 05.24 बजे नरैनापुर गांव के पूरब स्थित तालाब के पास से नेपाल बार्डर जाने वाले मार्ग के पास से गिरतार किया गया, जिसके पास से 01 आलाकत्ल लोहे की कुल्हाड़ी बरामद की गयी। आवश्यक विधिक कार्यवाही पूर्ण कर अभियुक्त दूबर खाँ पुत्र ईमामी खाँ निवासी नरैनापुर दा0 रामपुर हुसैनबक्श थाना रुपईडीहा को पेशी हेतु न्यायालय सदर रवाना किया गया।

अरुण भोजवाल को भोजवाल रत्न से किया सम्मानित

न्यूज वाणी ब्यूरो

अयोध्या। लखनऊ से पैदल यात्रा पहुंची अयोध्या में अरुण भोजवाल आजाद को भोजवाल जागृति पदयात्रा के माध्यम से भोजवाल समाज को संगठित करके भोजवाल समाज को जागृत करने के लिए श्री राम जानकी कान्यकुब्ज वैश्य भोजवाल पंचायती मंदिर विभीषण कुंड, अयोध या धाम द्वारा भोजवाल रत्न से सम्मानित किया गया। तीन दिवसीय भोजवाल जागृति पदयात्रा लखनऊ से अयोध्या धाम के श्री राम जानकी मंदिर विभीषण कुण्ड पहुंचने पर श्री राम जानकी मंदिर अयोध्या धाम के महंत श्री दुर्गेश दास एवं भोजवाल समाज अयोध्या के द्वारा पदयात्रा का भव्य स्वागत किया गया एवं पद यात्रा का नेतृत्व कर रहे भोजवाल फाउंडेशन के अध्यक्ष अरुण भोजवाल को यहां भोजवाल रत्न से इस यात्रा का सफलतापूर्वक समापन स्थल तक पहुंचने पर सम्मान दिया गया। अरुण भोजवाल आजाद इस सम्मान से गदगद होकर कहा कि यह यात्रा पूरे प्रदेश में चरणबद्ध तरीके से होली के बाद निकाली जाएगी और पूरे उत्तर प्रदेश के एक करोड़ से भी अधिक भोजवाल समाज को एक मंच पर लाने का प्रयास किया जाएगा जिससे इस समाज को भी राजनैतिक एवं सामाजिक हक और अधिकार प्राप्त हो सके। इस पैदल यात्रा में बिहार से गणेश कानू मुखिया, मुंबई से राम जी भोजवाल, राष्ट्रीय भारतीय अखंड पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवराम प्रजापति, राष्ट्रीय सचिव दिलीप प्रजापति, प्रदेश अध्यक्ष शिवनाथ भोजवाल, प्रदेश अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ युगल प्रजापति, मंडल अध्यक्ष लखनऊ सुरेंद्र प्रकाश भोजवाल सहित दिलीप भोजवाल, हरीश भोजवाल, आलोक भोजवाल, शुभम भोजवाल, विजय भोजवाल, जितेंद्र भोजवाल , मनोज भोजवाल, शिवा, छोटू अनुज भोजवाल, सुशील भोजवाल तथा अयोध्या जनपद से पदयात्रा में शामिल होने वाले भोजवाल समाज के सुल्तानपुर से बजरंगी भोजवाल, विजय भोजवाल, अशोक भोजवाल, रक्तदानी दीपक भोजवाल, विनोद भोजवाल, राम सुमेर भोजवाल, मोहित भोजवाल, दीपक गुप्ता, वेद प्रकाश, छेदीलाल चौध री, संजय, शिलादेवी, बस्ती से रामकुमार भोजवाल, बृजभान भोजवाल, हरिराम भोजवाल, रामगोपाल भोजवाल, शिवाजी भोजवाल, राजन भोजवाल, अशोक भोजवाल, गोरखपुर से अशोक भोजवाल, सुग्रीव, रवि भोजवाल, भदोही से शेषधर भोजवाल, गोंडा से मनीष भोजवाल, श्यामू भोजवाल, दीपक भोजवाल, अजय, कशौधन, विनय भोजवाल, संतोष भोजवाल, नमन भोजवाल, मुन्ना भोजवाल, दीनानाथ भोजवाल, संतोष धानेपुर, मुरादाबाद से राकेश भोजवाल, भोजवाल, बरेली से हरिश्चंद्र सक्सेना, दिल्ली से डॉ प्रमोद भोजवाल, राजीव भोजवाल लखनऊ से डॉ मनोहर गुप्ता कानू, अशोक गुप्ता, डॉ मनोज गुप्ता, अवधेश, कौशल रिटायर्ड कैप्टन, जयराम रिटायर्ड फौजी, भीम भोजवाल, सुनील भोजवाल, अयोध्या से मनीष देव भोजवाल, ओमप्रकाश भोजवाल, संतोष भोजवाल, भाई लाल भोजवाल, अमन भोजवाल, रमेश भोजवाल, जगदीश भोजवाल, अजय भोजवाल, शिवकुमार भोजवाल, शिव प्रताप भोजवाल,

मनोज भोजवाल, सेठ अतुल भोजवाल प्रतापगढ़ से वर्षा भोजवाल, प्रदीप भोजवाल प्रधानजी, रायबरेली से राकेश भोजवाल, वीरेंद्र भोजवाल बाराबंकी से रामानंद भोजवाल, श्रीनाथ भोजवाल, विपिन कुमार मनोज कुमार तथा अतुल भोजवाल, पवन भोजवाल, संजय भोजवाल, आशीष सुरेंद्र रामप्रकाश आदि भोजवाल समाज के लोग सम्मिलित हुए।

एडीएम ने ब्लैक आउट माकड्रिल की तैयारियों को लेकर की बैठक

न्यूज वाणी ब्यूरो

गाजीपुर। अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जयंती के अवसर पर समस्त नागरिक सुरक्षा जनपदों में आयोजित होने वाले ब्लैक आउट मॉकड्रिल की तैयारियों को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। बैठक में अपर जिलाधिकारी ने बताया कि ब्लैक आउट मॉकड्रिल का आयोजन नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जयंती 23 जनवरी को किया जाएगा। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि कार्यक्रम के दौरान कानून–व्यवस्था, यातायात, स्वास्थ्य, अग्निशमन, आपदा प्रबंधन एवं सुरक्षा व्यवस्था से संबंधित सभी तैयारियां समय से पूर्ण कर ली जाएं। मॉकड्रिल के माध्यम से विभिन्न विभागों के बीच आपसी समन्वय एवं त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली का परीक्षण किया जाएगा। बैठक मे अपर उप जिलाधिकारी विनोद जोशी, जिला विकास अधिकारी सुभाष चन्द्र सरोज, क्षेत्राधिकारी सदर, नोडल अधिकारी नागरिक सुरक्षा, जिला युवा कल्याण अधिकारी, मुख्य अग्निशमन अधि ाकारी, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी एवं अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण एवं आपदा विशेषज्ञ अशोक राय, नागरिक सुरक्षा के पदाधिकारी व सदस्य अभिषेक सिंह, .ष्ण कुमार गुप्ता मौजूद रहे।

गौमाता के खिचड़ी भोग के आयोजन में शामिल हुए योगी सतनाथ महाराज

न्यूज वाणी ब्यूरो

बांदा। मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर साप्ताहिक कार्यक्रम के दौरान महुआ ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम पंचायत गिरवा में संचालित अस्थाई गौशाला में योगी सत्यनाथ महाराज गौशाला में पहुंचकर गौ माता को खिचड़ी खिलाया और गौ पूजन भी किया और साथ में गौशाला का स्थिति का जायजा लिया और उन्होंने अनुरोध किया गौशाला में जो भी

व्यवस्थाएं मिल रही हैं उनको तत्काल प्रभाव से सुधार किया जाए नहीं अन्यथा की स्थिति में बड़े स्तर पर कार्रवाई करने के लिए बाद होंगे इसके जिम्मेदार स्वय यहां के अधिकारी होंगे। विश्व हिंदू महासंघ गौरक्षा के जिलाध्यक्ष महेश कुमार प्रजापति ने जानकारी देते हुए बताया कि मकर संक्रांति की शुभ अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सप्ताह भर कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं इसी के तहत आज कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में योगी सत्यनाथ महाराज जी उपस्थित रहें और गौशाला में भ्रमण किया और गोपूजन भी किया। इस मौके में उपस्थित अधिवक्ता प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष दीपक शुक्ला जिला मंत्री महेश गुप्ता सत्य प्रकाश तिवारी विकास तिवारी रजनीश प्रजापति आदि कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बहराइच ब्लास्टर्स ने जीता ग्लैमरस टाइप प्रीमियर लीग का फाइनल मुकाबला

- जयप्रकाश बने मैन ऑफ द सीरीज, रेहान खान बेस्ट बॉलर

न्यूज वाणी ब्यूरो

बहराइच। स्वर्गीय कुशमेंन्द्र सिंह राणा की स्मृति में खेला जा रहा ग्लैमरस टाइप प्रीमियर लीग में आज टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला बहराइच ब्लास्टर्स एवं बहराइच योद्धा के बीच खेला गया। फाइनल मैच में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ विकास मिश्रा, विशिष्ट अतिथि डॉ अभिलाषा वर्मा, जॉय रायतानी, राधिड हुसैन चांद ,प्रेम नाथ तिवारी ,डीसीए सेक्रेटी इशरत महमूद खान ,राणा अनिल सिंह,मौजूद रहे।बहराइच ब्लास्टर्स के कप्तान जयप्रकाश गुप्ता ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। ब्लास्टर्स की शुरुआत खराब रही और दो विकेट जल्दी गिर गये लेकिन इसके बाद आये कप्तान जयप्रकाश के 63 एवं विजय ववंडर के 40 रनों की बदोलत निर्धारित 22 ओवरों में आल आउट होकर 155 रनों का स्कोर खड़ा किया। बहराइच योद्धा की तरफ से रेहान ने शानदार 5 विकेट एवं अंशुमान पाण्डे ने 02 विकेट अपने

नाम किए। 156 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए योद्धा के बल्लेबाज फाइनल का दबाव नहीं झेल पाये और निश्चित अंतराल पर अपना विकेट गंवाते रहे और पूरी टीम 21वें ओवर में 120 रनों पर आल आउट हो गई। योद्धा की तरफ से अभिषेक यादव ने 27 एवं रेहान ने 25 रनों का योगदान दिया। बहराइच ब्लास्टर्स की तरफ से कप्तान जयप्रकाश ने शानदार 5 विकेट एवं मृदुल श्रीवास्तव ने 02 विकेट लेकर अपनी टीम को 35 रनों से जीत दिला दी। शानदार आलराउंडर प्रर्दशन की बदौलत जयप्रकाश को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। टूर्नामेंट में बेस्ट बॉलर का खिताब रेहान खान ,बेस्ट बैट्समैन जयप्रकाश व मैन ऑफ द सीरीज जयप्रकाश को दिया गया। मैच में अंपायरिंग की भूमिका आतिफ खान एवं अकील अहमद ने निभाई ।स्कोरर की भूमिका में यश चौरसिया मौजूद रहे। आंखों देखा हाल आदिल जमीर के द्वारा सुनाया गया। लाइव प्रसारण आशुतोष कैराती के द्वारा किया गया। मैच के दौरान इस अनुपमा धनुक, शेखर कालिया, प्रेमनाथ तिवारी, कुशल गोयल, अवनीश सिंह, नित्यम श्रीवास्तव, राज कुमार सिंह, अभिषेक शर्मा, संदीप सिंह, राकेश सिंह, लोकेश तोलानी, सुनील राय, संजीव सोलंकी, मनोज गुप्ता, भूपेंद्र पांडे, सुनील राय, इतिखार अली, रामानंद सिंह, देवाशीष राय आयुष चित्रांश, कार्तिकेय सिंह, तुषार सोनी, सारिक, उत्कर्ष एवं अन्य खेल प्रेमी मौजूद रहे।

बल्दीराय में विकास को मिली रतार, ब्लॉक प्रमुख ने सड़कों का किया लोकार्पण

न्यूज वाणी ब्यूरो

सुल्तानपुर। बल्दीराय तहसील क्षेत्र में सोमवार को ग्रामीण विकास की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। जिला पंचायत सुल्तानपुर निधि के पंद्रहवें वित्त आयोग अनटाइड ग्रांट योजना के अंतर्गत निर्मित दो सोलिंग (खड़ंजा) सड़कों का लोकार्पण जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि व ब्लॉक प्रमुख शिवकुमार सिंह ने फीता काटकर किया। पहला सड़क निर्माण कार्य अयोध्या–जगदीशपुर नेशनल हाईवे से पूरे भवानी होते हुए हलियापुर की ओर तक कराया गया है, जिससे आसपास के कई गांवों को सीधा संपर्क मार्ग मिला है। वहीं दूसरा सोलिंग (खड़ंजा) मार्ग उसकामऊ विश्वनाथपुर प्राथमिक विद्यालय से अयोध्या बॉर्डर स्थित संतोष पांडे के घर तक बनाया गया है। इन सड़कों के निर्माण से क्षेत्रीय ग्रामीणों को आवागमन में बड़ी सुविधा मिलेगी, साथ ही किसानों, विद्यार्थियों और आम लोगों के लिए आवागमन सुगम होगा। लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान ग्राम प्रधान अरुण सिंह, अरविंद सिंह बबलू, कैप्टन डीएन सिंह, पूर्व प्रधान जयसिंह, ठेकेदार मुदित सिंह, वेद अग्रहरि सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने सड़क निर्माण के लिए जनप्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया।

जनसुनवाई में एसएसपी ने फरियादियों की समस्याएं सुनी

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। पुलिस कार्यालय में नियमित रूप से आयोजित जनसुनवाई के दौरान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा विभिन्न थाना क्षेत्रों से आए फरियादियों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना गया। जनसुनवाई में पहुंचे फरियादियों से प्राप्त प्रार्थना पत्र लेकर उन्हें न्यायोचित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण का आश्वासन दिया गया। जनसुनवाई के दौरान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा संबंधित राजपत्रित पुलिस अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों से स्वयं वार्ता कर प्राप्त शिकायतों का शीघ्र, निष्पक्ष एवं प्रभावी निराकरण सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। एसएसपी ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक शिकायत का निस्तारण समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से किया जाए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कहा कि फरियादियों की समस्याओं का तत्परता से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करना इटावा पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई में प्राप्त प्रत्येक प्रार्थना पत्र का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, जिससे आमजन का पुलिस के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत हो।

भागवत महापुराण कथा का आयोजन, श्रद्धालुओं में दिखा उत्साह

- श्री 1108 पं. सागरदास जी महाराज के श्रीमुख से होगी कथा

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। गांधीनगर अड्डा गूलर फील्ड क्षेत्र में धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से श्रीमद्भागवत महापुराण सप्ताह ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस धार्मिक आयोजन के अंतर्गत रासलीला, रुक्मिणी विवाह महोत्सव एवं विशाल कथा आयोजन संपन्न होंगे, जिससे समूचे क्षेत्र में भक्तिमय वातावरण व्याप्त हो गया है। इस पावन आयोजन में श्री 1108 पंडित सागरदास जी महाराज के श्रीमुख से भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा का रसपान श्रद्धालुओं को कराया जाएगा। कथा के दौरान भगवान श्री.ष्ण की दिव्य लीलाओं, भक्त प्रह्लाद, ध्रुव, रुक्मिणी विवाह एवं अन्य प्रसंगों का सजीव वर्णन किया जाएगा। आयोजन समिति

के अनुसार यह धार्मिक कार्यक्रम परम पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी रामदास जी महाराज की .पा एवं मार्गदर्शन से आयोजित किया जा रहा है। कथा वाचन के माध्यम से धर्म, भक्ति और संस्कारों का संदेश जन–जन तक पहुँचाया जाएगा। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन देव प्रताप सिंह द्वारा किया जा रहा है। आयोजन में राम नारायण मिश्रा (वरिष्ठ) का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। वहीं कथा आयोजन में पं. शिवांश मिश्रा (वेद) एवं ज्योति मिश्रा की भी महत्वपूर्ण सहभागिता रहेगी। आयोजन समिति ने क्षेत्र के समस्त श्रद्धालुओं, धर्मप्रेमियों एवं भक्तजनों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर भागवत महापुराण कथा का श्रवण करें और पुण्य लाभ अर्जित करें। इस धार्मिक आयोजन से क्षेत्र में धार्मिक आस्था, सद्भाव एवं सामाजिक समरसता को बल मिलेगा। यह शुभ धार्मिक आयोजन गांधीनगर अड्डा गूलर अड्डा फील्ड इटावा में निरंतर किया जा रहा है।

थाना पछायगांव क्षेत्र में महिलाओं व बालिकाओं को किया जागरूक

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। मिशन शक्ति फेज 5.0 के अंतर्गत सोमवार को थाना पछायगांव पर गठित महिला मिशन शक्ति टीम द्वारा थाना पछायगांव

क्षेत्र में जाकर महिलाओं एवं बालिकाओं को मिशन शक्ति अभियान के तहत जागरूक किया गया। इस दौरान पंपलेट वितरण कर महिलाओं व बालिकाओं को सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, हेल्पलाइन नंबरों तथा साइबर अपराध से बचाव के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। अभियान के दौरान पुलिस आपातकालीन सेवा 112, स्वास्थ्य सेवा, एंबुलेंस 102 व 108, वीमेन पावर लाइन 1090, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, वीमेन हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930, एलपीजी गैस रिसाव हेल्पलाइन 1906 तथा उपभोक्ता अधिकार हेल्पलाइन 1915 के बारे में जानकारी दी गई, साथ ही विधवा पेंशन योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, नशा मुक्ति भारत अभियान, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) एवं आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के संबंध में भी विस्तार से बताया गया। महिला मिशन शक्ति टीम द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं को संदेश दिया गया कि स्वस्थ और सतर्क रहना ही वास्तविक सुरक्षा है, सभी से अपील की गई कि वे हेल्पलाइन नंबरों एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी अपने परिवार एवं मित्रों के साथ साझा करें, छात्र–छात्राओं को पढ़ाई को प्राथमिकता देने, सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने तथा स्वयं सुरक्षित रहकर समाज को भी सुरक्षित बनाने का आह्वान किया गया।

मिशन शक्ति के अंतर्गत महिलाओं को किया जागरूक

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। मिशन शक्ति फेज 5.0 अभियान के अंतर्गत 19 जनवरी को थाना चौबिया पर गठित महिला मिशन शक्ति टीम द्वारा ग्राम काकरपुरा में जाकर महिलाओं एवं बालिकाओं को जागरूक किया गया। इस दौरान मिशन शक्ति अभियान के तहत पंपलेट का वितरण किया गया तथा महिलाओं और बालिकाओं को विभिन्न हेल्पलाइन

नंबरों, साइबर क्राइम से बचाव, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य जागरूकता के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित महिलाओं को पुलिस आपातकालीन सेवा 112, स्वास्थ्य सेवा एवं एंबुलेंस 102 व 108, वीमेन पावर लाइन 1090, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930, एलपीजी गैस रिसाव हेल्पलाइन 1906 तथा उपभोक्ता अधिकार हेल्पलाइन 1915 के बारे में जानकारी दी गई। टीम द्वारा बताया गया कि स्वस्थ और सतर्क रहना ही असली सुरक्षा है। महिला मिशन शक्ति टीम द्वारा महिलाओं और बालिकाओं को सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे विधवा पेंशन योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, नशा मुक्ति भारत अभियान, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन तथा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के संबंध में भी जानकारी दी गई। साथ ही यह अपील की गई कि इन योजनाओं का लाभ उठाकर अपने एवं अपने परिवार के जीवन को बेहतर बनाएं तथा हेल्पलाइन नंबरों और योजनाओं की जानकारी परिवार, रिश्तेदारों एवं मित्रों के साथ साझा करें। छात्र एवं छात्राओं को पढ़ाई को प्राथमिकता देने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का संदेश भी दिया गया।

मणिकर्णिका घाट ध्वस्तीकरण को लेकर कांग्रेस का विरोध

- राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। भाजपा सरकार द्वारा वाराणसी स्थित ऐतिहासिक मणिकर्णिका घाट को 10 जनवरी को अचानक ध्वस्त किए जाने के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने रोष व्यक्त किया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष आशुतोष दीक्षित के नेतृत्व में कांग्रेसजन जिला मुख्यालय पहुंचे और जिलाधिकारी के माध्यम से राज्यपाल को संबोधित एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि मणिकर्णिका घाट का जीर्णोद्धार वर्ष 1791 में माता अहिल्याबाई होलकर द्वारा कराया गया था और यह स्थान उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि ध्वस्तीकरण के दौरान घाट पर स्थापित माता अहिल्याबाई होलकर की पवित्र एवं ऐतिहासिक मूर्तियां मलबे में दब गई हैं, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी पर सनातन विरोधी रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि शासन–प्रशासन द्वारा यह कार्यवाही घाट के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व की पूरी तरह अनदेखी करते हुए की गई है। कांग्रेस ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र ही मलबे में दबी मूर्तियों को यथास्थान पुनः स्थापित नहीं किया गया, तो भाजपा सरकार की इस शर्मनाक कार्यवाही के विरोध में कांग्रेस पार्टी को बड़ा आंदोलन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। ज्ञापन

सौंपने वालों में प्रमुख रूप से शहर अध्यक्ष मोहम्मद राशिद, पूर्व जिला अध्यक्ष मलखान सिंह यादव, पूर्व शहर अध्यक्ष पल्लव दुबे, करण सिंह राजपूत, प्रशांत तिवारी, प्रेम किशोर द्विवेदी, प्रवक्ता वाचस्पति द्विवेदी, प्रेरणा जुबैरी, अमित त्रिपाठी, अंबुज, नरेंद्र यादव, विष्णु कांत मिश्रा, आसिफ जादरान, सचिन शंखवार, प्रदीप कुमार द्विवेदी, दीक्षा शुक्ला, अमन तिवारी, अनूप सिंह परमार, सिद्धनाथ यादव, रजत राय चौबे, अंसार अहमद, रमेश सिंह, उमाकांत एवं रणवीर सिंह सहित अनेक कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आसई जैन मंदिर में हुआ धार्मिक आयोजन

– अशोक भैयाजी की निकाली विनौली यात्रा

न्यूज वाणी ब्यूरो

इटावा। शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर, आसई में एक दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धा एवं उल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर गौरव पूज्य आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज के आशीर्वाद से ब्रह्मचारी आशोक जैन भैयाजी की गोद भराई एवं विनौली यात्रा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के अंतर्गत श्री दिगंबर जैन मंदिर, आसई प्रातःकाल श्रीजी का अभिषेक व शांतिधारा पुजारियों द्वारा केसर के जल के साथ किया गया इसके उपरांत राग मंडल विधान विधिवत संपन्न कराई गई। इसके उपरांत महिलाओं द्वारा भगवान के भजनों का आयोजन किया गया, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।सायंकाल श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर लालपुरा मे भगवान के भजन के साथ महेदी व हल्दी रस्म की गई इसके उपरांत विनौली यात्रा भैयाजी के निज निवास से गाजे–बाजे एवं बग्गी के साथ प्रारंभ हुई, जो अस्तल, मकसूदपुरा, कटरा मंदिर, रामगंज चौराहा, नौरंगाबाद चौराहा, तिकोनिया आदि मार्गों से होते हुए रंगलाल चौराहा एवं लालपुरा जैन मंदिर पहुचंकर सम्पन्न हुई। यात्रा के दौरान जगह–जगह श्रद्धालुओं द्वारा मेवा व तिलक कर भैयाजी का भव्य स्वागत किया गया। भक्तजन भक्ति नृत्य में झूमते नजर आए।जैन समाज अध्यक्ष संजू जैन ठेकेदार ने जानकारी देते हुए बताया कि पूज्य आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज के परम सानिध्य में ब्रह्मचारी आशोक जैन भैयाजी का भव्य दीक्षा समारोह 23 जनवरी, वसंत पंचमी के पावन अवसर पर मुंगेर (झारखंड) में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने समस्त श्रद्धालुओं से कार्यक्रम में उपस्थित होकर धर्मलाभ लेने का आग्रह किया। श्री.ष्ण जैन प्रदीप जैन लव कुमार जैन कुश जैन विनोद जैन बोनू प्रमोद जैन कंचन जैन चंदन जैन वैभव जैन सुशील जैन अभिषेक जैन चीता रिषभ जैन अर्पित जैन विक्की जैन आदि लोग मौजूद रहे।

सड़क हादसे की प्राथमिकी दर्ज

न्यूज वाणी ब्यूरो

एलाऊ, फिरोजाबाद। गांव बझेरा बुजुर्ग निवासी युवक मेघराज पुत्र राजन सिंह ने थाना एलाउ पर तहरीर देकर सड़क हादसे का मुकदमा दर्ज कराया है। बताया बीते रविवार को मेरा पुत्र हरगोविंद सिंह अपने गांव बझेरा से मोटरसाइकिल द्वारा थाना एलाउ क्षेत्र के गांव रम्पुरा जा रहा था। जैसे ही वह पडीना नदी पुल के पास पहुंचा, तभी किसी अज्ञात वाहन के चालक द्वारा तेजी व लापरवाही से चलाते हुए मेरे पुत्र की मोटरसाइकिल में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों द्वारा मुझे सूचना दी गई। सूचना मिलने के बाद हम लोग घटनास्थल पहुंचे और घायलावस्था में उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल मैनपुरी ले गए। अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पीड़ित पिता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर वाहन चालक की तलाश शुरू कर दी है।

बार अध्यक्ष ने अधिवक्ता जैनुल के चेंबर का किया उद्घाटन

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। जनपद के दीवानी न्यायालय परिसर स्थित छोटे गेट के समीप अधिवक्ता जैनुल अब्बास के नए चेंबर का भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बार एसोसिएशन के अध्यक्ष गया प्रसाद दुबे रहे। जिन्होंने विधि–विधान के साथ फीता काटकर

चेंबर का शुभारंभ किया। उद्घाटन के उपरांत उपस्थित अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए अध्यक्ष गया प्रसाद दुबे ने जैनुल अब्बास के उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि जैनुल अब्बास एक कर्मठ और निष्ठावान अधिवक्ता हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे आम जनता के सभी प्रकार के कानूनी मामलों को पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ कोर्ट में लड़ेंगे। उनका लक्ष्य पीड़ितों को सुलभ न्याय दिलाना होगा, जिससे न्यायपालिका के प्रति आमजन का विश्वास और सु.ढ़ होगा। इस गरिमामयी अवसर पर न्यायिक जगत से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियां मौजूद रहीं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जगदीश सिंह चौहान, जावेद खान, आदिल खान, अर्जुन सिंह, धर्मेंद्र, ललित मिश्रा, आसिफ मकसूद और अशोक सिंह सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता साथी उपस्थित रहे। सभी ने नए चेंबर के लिए जैनुल अब्बास को बधाई देते हुए अपनी शुभकामनाएं दी।

महिला महाविद्यालय में रोड सेटी क्लब ने कराई प्रतियोगिताएं

- नुक्कड़ नाटक में साइमा व समूह, रील मेकिंग में कीर्ति व भाषण प्रतियोगिता में शुभी रहीं प्रथम

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रोड सेटी क्लब के तत्वधान में रोड सेटी प्रभारी डॉ0 अनुष्का छौंकर के दिशा निर्देश में विभिन्न प्रतियोगिताओं भाषण, नुक्कड़ नाटक एवं रील मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सम्मिलित छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने यातायात नियमों के पालन, दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट एवं चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट के प्रयोग तथा सुरक्षित ड्राइविंग को अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश यादव ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम छात्राओं में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं। नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में साइमा एवं समूह तथा जोया एवं समूह ने उत्कृष्ट प्रस्तुति देकर प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। रील मेकिंग प्रतियोगिता में बीएससी प्रथम वर्ष की कीर्ति सोनी प्रथम, एमएससी द्वितीय वर्ष की सारा फातिमा द्वितीय व बीएससी तृतीय वर्ष की शुभी सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में बीएससी तृतीय वर्ष की शुभी सिंह ने प्रथम, एमएससी द्वितीय वर्ष की सारा फातिमा ने द्वितीय व रिफत जहां को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश यादव ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम छात्राओं

में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं। इस अवसर पर प्रो. शकुन्तला, प्रो. लक्ष्मीना भारती, प्रो. प्रशांत द्विवेदी, डॉ. शरद चंद्र राय, डॉ. चारु मिश्रा, रमेश सिंह, डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव, डॉ. चंद्रभूषण सिंह, डॉ बृजेश कुमार पाल, डॉ आनंद सहित समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे। समापन राष्ट्रहित एवं सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता के संदेश के साथ किया।

भव्य कलश यात्रा से भागवत कथा का शुभारंभ

- प्राचीन दुर्गा मंदिर परिसर में साप्ताहिक कथा

न्यूज वाणी ब्यूरो

खागा, फतेहपुर। नगर स्थित नीमटोला क्षेत्र के प्राचीन दुर्गा मंदिर परिसर में सात दिनों तक आयोजित होने वाली भगवत कथा का धूमधाम से शुभारंभ हुआ। इस विशेष अवसर पर एक भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें नगर और मुहल्ले के सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए। कलश यात्रा में महिलाएं सुंदर साज–धाज के साथ जल भरने के लिए निकलीं, जबकि पुरुष श्रद्धालु शंख और ढोल की ध्वनि के साथ साथ चल रहे थे। भगवत कथा के आयोजन को लेकर स्थानीय निवासियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। आयोजन के दौरान मंदिर परिसर को आकर्षक तरीके से सजाया गया था और हर तरफ भक्ति का वातावरण था। कथा के मुख्य वाचक ने श्रद्धालुओं को भगवान श्री. ष्ण के जीवन से जुड़े विभिन्न किस्सों और उपदेशों से अवगत कराया। शुभारंभ के इस पावन अवसर पर मंदिर परिसर में भारी भीड़ जमा हुई और भक्तों ने सच्चे मन से पूजा अर्चना की। नीरज अग्रवाल, आलोक अग्रवाल, अमित त्रिपाठी, शिवचंद्र शुक्ल, बजरंगी, राजेंद्र सिंह, अमित पांडेय मौजूद रहे।

पंचायत सहायकों के अध्यक्ष समेत सभी पदों का चुनाव 21 को

- बहुआ ब्लाक इकाई की नई कार्यकारिणी के गठन को लेकर सरगर्मी तेज

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। पंचायत सहायक कर्मचारी यूनियन उत्तर प्रदेश की बहुआ ब्लॉक इकाई की नई कार्यकारिणी के गठन को लेकर सरगर्मी तेज हो गई है। बुधवार को ब्लॉक मुख्यालय स्थित सभागार में बहुआ ब्लॉक अध्यक्ष सहित अन्य महत्वपूर्ण पदों के लिए चुनाव कराया जाएगा। इस चुनाव में बहुआ ब्लॉक के 59 ग्राम पंचायतों के सभी पंचायत सहायकों की भागीदारी रहेगी। चुनाव को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए एडीओ पंचायत विष्णु वर्मा को निर्वाचन अधिकारी तथा सचिव कुलदीप सिंह राठौर को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। चुनाव कार्यक्रम सुबह 10 बजे से शुरू होगा। सौरभ सिंह, ज्ञान सिंह चौहान, विकास विष्वकर्मा, अतुल राजपूत, अनुराग कश्यप, पंकज, शुभम पाल, पुजा, सिद्धि सिंह, सुप्रिया सिंह, प्रिया मिश्रा, तनु श्रीवास्तव आदि पंचायत सहायकों का कहना है कि नई कार्यकारिणी के गठन से पंचायत सहायकों की समस्याओं को मजबूती से उठाने और संगठन को और सशक्त बनाने में मदद मिलेगी। ब्लॉक स्तर पर होने जा रहे इस चुनाव को लेकर पंचायत सहायकों में खासा उत्साह और सक्रियता देखने को मिल रही है।

एआईएमआईएम का सनगांव वार्ड से प्रत्याशी घोषित

- मो0 अहमद हाफिज जी का माला पहनाकर स्वागत

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। जिला पंचायत सदस्य पद के चुनाव की सरगर्मियां तेज होते ही प्रत्याशी मैदान में आ रहे हैं। सोमवार को आल इंडिया

मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुसलेमीन की एक बैठक सनगांव में आयोजित हुई। जिसमें जिला पंचायत सदस्य पद के लिए प्रत्याशी का चयन कर माला पहनाकर स्वागत किया। बैठक की अध्यक्षता मुती शफीउद्दीन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जिलाध्यक्ष मुहीउद्दीन एडवोकेट ने शिरकत की। सर्वप्रथम महाराष्ट्र के निकाय चुनाव में पार्टी के 125 कारपोरेटरों की जीत पर खुशियां मनाई गई। जिलाध्यक्ष ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष हाजी शौकत अली की संस्तुति पर मो0 अहमद उर्फ राजू हाफिज जी को जिला पंचायत सदस्य सनगांव वार्ड से लड़ाया जाएगा। घोषणा के बाद उपस्थित लोगों ने हाफिज जी का माला पहनाकर स्वागत किया। उपस्थित पार्टी पदाधिकारियों व समर्थकों ने कहा कि पार्टी के घोषित प्रत्याशी हाफिज जी को चुनाव में जिताने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाएगी। इस मौके पर यूथ जिलाध्यक्ष मो0 कासिम, कोषाध्यक्ष मुशीर, संगठन मंत्री हसीब, मुहीब के अलावा ग्राम प्रधान सनगांव भी मौजूद रहे।

एकारी टीम ने जीता राही क्रिकेट कप

- फाइनल में फतेहपुर को 52 रनों से हराया

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। एकारी ग्राम सभा में आयोजित राही क्रिकेट कप का फाइनल मुकाबला एकारी व फतेहपुर टीमों के बीच रोमांचक

माहौल में खेला गया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए एकारी की टीम ने निर्धारित 16 ओवरों में 164 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया। एकारी के क्रिकेटर अरशद ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मात्र 11 गेंदों में 3 चौके और 5 छक्कों की मदद से 45 रनों की विस्फोटक पारी खेली, जिसने दर्शकों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। 165 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी फतेहपुर की टीम दबाव में नजर आई और 12.5 ओवरों में 112 रन पर ही सिमट गई। इस तरह एकारी की टीम ने 52 रनों से मुकाबला जीतकर राही क्रिकेट कप अपने नाम किया। मैच के बाद आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में बसपा नेता मोहम्मद आसिफ एडवोकेट ने विजेता एकारी टीम और उपविजेता फतेहपुर टीम को ट्रॉफी एवं पुरस्कार प्रदान कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर बसपा नगर अध्यक्ष गाजी अब्दुल रहमान गनी, प्रदीप कोरी, आयोजक मोहम्मद नौशाद, मोहम्मद फैजान, सलमान, फैजान खान, जमील अहमद सहित बड़ी संख्या में क्रिकेट प्रेमी उपस्थित रहे। आयोजन को लेकर ग्रामीणों में खासा उत्साह और खुशी का माहौल देखने को मिला।

आरके पैलेस एवं गेस्ट हाउस का हुआ शुभारंभ

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। अभिलाषा गार्डन के सामने आरके पैलेस एवं गेस्ट हाउस का विधवत हवन पूजन करके शुभारंभ किया गया। इस दौरान गेस्ट हाउस के संचालक अविनाश प्रताप सिंह ने बताया कि उनके इस गेस्ट हाउस में छह वातानुकूलित कमरे हैं व दो बड़े हाल हैं। जिसमें लोग शादी ब्याह, गोद भराई, बरीक्षा, बर्थडे पार्टी के साथ तमाम पार्टियों के लोग अपनी मीटिंग कर सकते हैं। इस दौरान उन्होंने यह भी बताया कि अन्य गेस्ट हाउस की अपेक्षा उनके गेस्ट हाउस का किराया भी कम है और सुविधाएं वही है जो दूसरे गेस्ट हाउस में है। उन्होंने कहा कि आम जनमानस को ध्यान में रखकर यह गेस्ट हाउस खोला गया है। जिसमें लोग अपनी सुविधा के अनुसार और अपने बजट के अनुसार कार्यक्रम सुगमता से कर सकते हैं। इस अवसर पर पलक सिंह, किरन सिंह, विक्रम सिंह, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष मिश्रा, नागेंद्र सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

व्यापार मंडल ने स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर डीएम को सौंपा ज्ञापन

- रक्त सेवा कार्यों को और अधिक सुचारू व सहयोगात्मक बनाए जाने की मांग

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। जिला उद्योग व्यापार मंडल (पंजी०) के प्रदेश अध्यक्ष रवि प्रकाश दुबे के नेतृत्व में सोमवार को जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन में बताया गया कि गुरमीत सिंह संगठन के युवा जिलाध्यक्ष व संस्था सर्व फॉर ह्यूमैनिटी फाउंडेशन के प्रबंधक हैं। जो विगत आठ वर्षों से निरंतर एवं निष्पक्ष रूप से जनपद सहित प्रदेश स्तर पर रक्त सेवा कार्य कर रही है। संस्था का एकमात्र उद्देश्य जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराना है। बताया कि संस्था को किसी भी सरकारी संगठन द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर की तिथि से कोई आपत्ति नहीं है। न ही कभी रही है। समस्या तिथि के टकराव की भी नहीं, बल्कि सरकारी पद व सरकारी नाम का प्रयोग कर गैर–सरकारी संस्था पर अनावश्यक दबाव बनाए जाने की है। जो अब असहनीय स्थिति में पहुंच चुका है। पिछले दो वर्षों से सरकारी संगठन जो जनपद स्तर पर आपके अधीन कार्य करती है संस्था के कुछ पदाधिकारियों

द्वारा संस्था के सेवा कार्य में निरंतर हस्तक्षेप किया जा रहा है। बार–बार एक ही तिथि पर जानबूझकर शिविर आयोजित कर फिर सरकारी प्रभाव का हवाला देकर संस्था पर स्थान बदलने, कार्यक्रम रोकने अथवा अपने शिविर को प्राथमिकता देने का दबाव बनाया जाता है। आठ मई को जिला चिकित्सालय रक्तकेंद्र में आयोजित शिविर के दौरान सरकारी संस्था से जुड़े कुछ व्यक्तियों द्वारा जिला चिकित्सालय परिसर में स्टाफ की मौजूदगी में नारेबाजी की गई जिससे सेवा कार्य की गरिमा प्रभावित हुई। उस समय संस्था ने स्थिति को बिगड़ने से रोकने हेतु पूर्ण संयम एवं सहयोग का परिचय दिया। इस वर्ष भी इसी दबावपूर्ण प्रवृत्ति की पुनरावृत्ति हुई। संस्था द्वारा पूर्व नियोजित रूप से रक्तदान शिविर लगाने की अपील की गई है। जानकारी मिलने पर कि उन्हीं तिथियों पर सरकारी संस्था का शिविर जिला चिकित्सालय रक्तकेंद्र में प्रस्तावित है, संस्था ने टकराव से बचने हेतु स्वयं का शिविर का स्थान बदलकर दूसरे स्थान में रक्तदान शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया। डीएम से मांग किया कि किसी भी सरकारी संगठन द्वारा गैर–सरकारी संस्थाओं पर आपके नाम अथवा पद का अनुचित दबाव न बनाया जाए, सरकारी संस्था एवं एनजीओ के मध्य स्पष्ट कार्य–सीमा एवं समन्वय सुनिश्चित किया जाए, सरकारी संस्था अपने शिविर जिला चिकित्सालय रक्तकेंद्र परिसर में आयोजित करें व संस्था के आयोजित शिविर को स्वतंत्र रूप से संचालित होने दिया जाए एवं सरकारी सहयोग प्रदान किया जाए। इस मौके पर युवा व्यापार मंडल महामंत्री व रक्तदाता शांतनु वर्मा, गुरमीत सिंह, राजेश मौर्य, शोभित सिंह, विनय, अजय, गौरव मिश्रा अन्य रक्तदाता उपस्थित रहे।

ध्वस्त मणिकर्णिका घाट के पुनर्निर्माण की मांग

- कांग्रेस ने राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने काशी के मणिकर्णिका घाट को प्रदेश सरकार द्वारा ध्वस्त कराए जाने का आरोप लगाते हुए उसके पुनर्निर्माण को लेकर जिलाधिकारी के माध्यम से राज्यपाल को एक ज्ञापन भेजा। ज्ञापन में कहा गया कि मणिकर्णिका घाट सन 1791 में माता अहिल्याबाई द्वारा जीर्णोद्धारित कराया गया था एवं सनातन धर्म में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए काशी के धर्माचार्यों एवं काशी वाशियो से विचार विमर्श कर उसका पुनर्निर्माण कराया जाए। ज्ञापन के बाद पत्रकारों से बात करते हुए जिलाध्यक्ष महेश द्विवेदी ने कहा कि प्रदेश सरकार विकास कार्यों से दूर केवल धर्म स्थलों को तोड़ने का काम कर रही है। काशी का मणिकर्णिका घाट सनातन धर्म के अनुसार बहुत महत्वपूर्ण स्थान है पर भाजपा सरकार पता नहीं कौन से सनातन धर्म को मानती है ये समझ से परे है क्योंकि सनातन धर्म गुरु शंकराचार्य अविमुक्तेष्वरा नंद को संगम स्नान से रोक कर उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि वह केवल सरकार बनाओ धर्म का पालन करती है सनातन धर्म या किसी धर्म से उसका कोई लेना देना नहीं। शहर अध्यक्ष मो0 आरिफ गुड्डा ने भी धर्म स्थलों को तोड़ने का विरोध करते हुए कहा कि कोई भी ऐतिहासिक धर्म स्थल नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत माना जाता है जिससे उन्हें अपने धर्म के महत्व की जानकारी होती है। उन्हें नष्ट करना अच्छमनीय अपराध है। इसलिए सरकार जल्द

से जल्द ध्वस्त घाट का पुनर्निर्माण कराए। इस मौके पर वरिष्ठ नेता सुधाकर अवस्थी, शेख एजाज अहमद, कलीम उल्ला सिद्दीकी, मणि प्रकाश दुबे, प्रवक्ता ई देवी प्रकाश दुबे, पं. रामनरेश महाराज, अनुराग नारायण मिश्र, आदित्य श्रीवास्तव, मनोज घायल, सहाब अली, मुन्ना, राजू लोधी, नवनीत तिवारी, बृजेश मिश्रा, बषीर अहमद, अमरनाथ कैथल, चौधरी मोईन राईन, अजय बच्चा, राजीव श्रीवास्तव, कासिम उल्ला, रिजवान, निजामुद्दीन आदि उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी कार्यकत्री ने मुख्य सेविका के खिलाफ फिर सौंपा ज्ञापन

- भ्रष्टाचार में लिप्त होने का मढ़ा आरोप, कार्रवाई की मांग

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। आंगनबाड़ी केन्द्र कठवारा द्वितीय में कार्यरत

आंगनबाड़ी कार्यकत्री ने सोमवार को एक बार फिर मुख्य सेविका के खिलाफ जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। उन्होने मुख्य सेविका पर भ्रष्टाचार में लिप्त होने का आरोप मढ़ते हुए कार्रवाई किए जाने की मांग की। जिलाधिकारी को दिए गए ज्ञापन में आंगनबाड़ी केन्द्र कठवारा द्वितीय की आंगनबाड़ी कार्यकत्री ऊषा देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद ने बताया कि उसे अपने केन्द्र के अतिरिक्त आंगनबाड़ी केन्द्र सुल्तानपुर का अतिरिक्त चार्ज सौंपा गया है। जिसकी दूरी उसके केन्द्र से लगभग 18 किलोमीटर है। केन्द्र का चार्ज देते समय उसने अनुरोध किया था कि इसका चार्ज किसी और कार्यकत्री को दे दिया जाए लेकिन उसकी एक न सुनी गई। बताया कि पोषाहार का वितरण क्षेत्रीय मुख्य सेविका शारदा वर्मा द्वारा किया जाता है। इसी प्रकार अन्य रिक्त केन्द्रों का चार्ज भी मनमाने तौर पर कार्यकत्री से चलवाया जाता है। बचे हुए पोषाहार को जबरन बिकवा लेती हैं। इतना ही नहीं मुख्य सेविका बाल विकास परियोजना में एकल हैं। बहनों से वितरण के नाम पर पैसा लेती हैं और निरीक्षण के दौरान भी रूपयों की मांग की जाती है। न देने पर गालियां व नौकरी से निष्कासन की धमकी दी जाती है। बताया कि 17 जनवरी को मुख्य सेविका ने चकसकरन मीटिंग में दोनों सेंटर के अभिलेख लेकर बुलाया। वह किसी कारणवश देरी से पहुंची। वह जा चुकी थी। रास्ते में मिलने पर उसने अभिलेख सौंपे। अभिलेख सही नहीं बने हैं आफिस ले जाने पर पांच हजार रूपए लेकर आने की बात कही और अभिलेख लेकर चली गई। इसके अलावा पीड़ित आंगनबाड़ी कार्यकत्री ने अन्य आरोप भी मढ़े। आंगनबाड़ी कार्यकत्री ने मांग किया कि मुख्य सेविका के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। जिससे विभाग की छवि धूमिल न हो।

पूर्व सैनिकों ने वृद्धाश्रम में बढ़ते वृद्धजनों की संख्या पर जताई चिंता

- भीख मांगने व वृद्धाश्रम में रह रहे वृद्धजनों की पृष्ठभूमि का लगाएंगे पता

- पुनः परिवार में स्थापित करवाने की दिलाई शपथ

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। पूर्व सैनिक उत्थान एवं लोक कल्याण समिति के पूर्व सैनिकों एवं आर्मी वाइब्स वेलफेयर संगठन की महिलाओं की संयुक्त आकस्मिक बैठक रंजना कक्कड़ के नेतृत्व में कार्यालय दक्षिणी गौतम नगर में आयोजित की गई। जहां जनपद में वृद्धाश्रम में बढ़ते हुए वृद्ध लोगों की संख्या और धार्मिक स्थलों के सामने भीख मांगने वालों में सर्वाधिक संख्या वृद्ध लोगों की बढ़ने पर चिंता व्यक्त की गई। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष विद्याभूषण तिवारी ने कहा कि यह न सिर्फ दुर्भाग्य का विषय है कि दिन प्रतिदिन वृद्धाश्रम व धार्मिक स्थलों पर भीख मांगने वालों में शत प्रतिशत संख्या वृद्ध लोगों की है। इसका जब उन्होंने आंकलन करवाया तब चौंकाने वाले आंकड़े सामने आये कि ऐसा सुनियोजित तरीके से परिवार की साजिश से उनको बैठाया जाता है और वहां से प्राप्त धन को लड़के ले जाते हैं और उनसे उनका घर का खर्च चलता है। इसी प्रकार वृद्धाश्रम में लोगों ने स्टे होम बना लिया है जहां से काफी लोग अवकाश लेकर अपने घर व रिश्तेदारियों में चले जाते हैं और पुनः कुछ समय पश्चात अपनी सुविधा अनुसार वृद्धाश्रम में वापस आ जाते हैं। पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई कि संगठन प्रत्येक वृद्ध व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि का पता करेगा और अन्य सामाजिक संगठनों व प्रशासन से मदद लेकर उनके परिवार से बात करके उनको पुनः परिवार में स्थापित करने का कार्य करेंगे। जिनका कोई सहारा नहीं होगा उनको वृद्धाश्रम भेजा जाएगा। महिला अवसर पर अमर प्रसाद कक्कड़, अध्यक्ष जागृति तिवारी ने कहा कि अब यह कार्य किसी मिशन की तरह तथा आंदोलन की तरह तब तक चलता रहेगा जब तक सभी वृद्ध लोगों को या तो उनके घर या वृद्ध आश्रम में समायोजित नहीं करा दिया जाएगा। इस

सुमन सिंह मौर्य, किरण, सुनीता देवी, साधना सिंह, भरोसा प्रसाद अग्निहोत्री, हीरालाल, रामराज, सूबेदार प्यारेलाल, राजेश कुमार शुक्ला, आरके तिवारी आदि उपस्थित रहे।

इलाज के दौरान मामा ने भी तोड़ा दम

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। कल्यानपुर थाने के मुरादीपुर के समीप एनएच 2 में रविवार की सुबह सड़क हादसे में चचेरे भाई बहन की मौत के बाद घायल मामा ने सदर अस्पताल में सोमवार की सुबह दम तोड़ दिया।

बताते चलें कि राधानगर थाना क्षेत्र के विनोबा नगर निवासी स्व0 मन्ना का 65 वर्षीय पुत्र सुरेश अपने चचेरा भांजा राजकिशोर व भांजी कल्लो के साथ रायबरेली जनपद के बछरांवा से वापस आ रहे थे। तभी मुरादीपुर के पास चार पहिया वाहन ने टक्कर मार दिया था। जिसमें भाई बहन की मौत हो गयी थी। जबकि मामा गंभीर रूप से घायल हो गया था। इलाज के दौरान सोमवार की सुबह उसकी मौत हो गयी। सूचना पर पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

पेड़ से टकराया वाहन, दो घायल

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। खखरेरू थाना क्षेत्र के ग्राम दरियामऊ के समीप देर रात अनियंत्रित होकर चार पहिया पेड़ से जा टकरायी। जिसमें चालक समेत दो लोग घायल हो गये। जिन्हे उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार थाने के थनैनी गांव निवासी स्व0 रघुनन्दन का 70 वर्षीय पुत्र इन्द्रदत्त शुक्ला गांव के ही स्व0 जमुना प्रसाद का 35 वर्षीय पुत्र चन्द्रशेखर शुक्ला के साथ शहर से वापस गांव जा रहे थे। जब वह लोग दरियामऊ के समीप पहुंचे तभी अनियंत्रित होकर चार पहिया पेड़ से जा टकरायी। जिससे दोनो घायल हो गये। सूचना पाकर मौके में पहुंची सरकारी एम्बुलेंस ने घायलों को उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया।

साइकिल से टकरा बाइक गिरी, वृद्ध सहित किशोर घायल

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। सदर कोतवाली क्षेत्र के चौफेरवा के समीप सोमवार की सुबह साइकिल में टक्कर मारने के बाद अनियंत्रित होकर बाइक गिर गयी। जिससे 60 वर्षीय वृद्ध नाती घायल हो गये। जिन्हे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार रायबरेली जनपद के थाना गदागंज गांव नरायनपुर बन्ना निवासी स्व0 रामेष्वर का पुत्र रामरतन अपने नाती पुष्पेन्द्र पुत्र नीलेश 9 वर्ष के साथ बाइक से अपनी पुत्री की ससुराल बिन्दकी गया था। वापस लौटते समय जैसे ही यह लोग चौफेरवा के पास पहुंचे तभी सामने से अचानक साइकिल आ जाने से बाइक टकरा गयी। जिससे बाबा नाती गिरकर घायल हो गये। सूचना पर पहुंची सरकारी एम्बुलेंस ने घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया।

हार्टअटैक पड़ने से एसआई की मौत

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। थाना सुल्तानपुर घोष में तैनात उप निरीक्षक इबरार खान का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। निधन की खबर मिलते ही सुल्तानपुर घोष प्रभारी तेज बहादुर सिंह सहित पूरे स्टाफ में शोक छा गया। श्री खान अभी कुछ महीने पहले ही सुल्तानपुर घोष थाने में सब इंस्पेक्टर के रूप में कार्यभार संभाले थे। सुल्तानपुर घोष में उनकी तैनाती 24 नवंबर 2024 को हुई थी। वे दो नंबर हल्का देख रहे थे। खान उसिया दिलदारनगर थाना एवं जिला गाजीपुर के रहने वाले थे। सब इंस्पेक्टर श्री खान अपने आवास प्रयागराज छुट्टी गए थे, जहां हार्ट अटैक पड़ जाने से उनका निधन हो गया। निधन की खबर सुनते ही शोक की लहर दौड़ गई। मालूम हो कि सब इंस्पेक्टर के रूप में इबरार खान काफी विनम्र स्वभाव के थे। स्टाफ की ओर से उन्हें भरपूर सम्मान मिलता था। फरियादियों की मदद करने में अग्रणी थे। निधन की खबर लगते ही सुल्तानपुर घोष थाने का स्टाफ स्तब्ध रह गया।

दोसर वैश्य महासमिति का मनाया स्थापना दिवस

न्यूज वाणी ब्यूरो

बिंदकी, फतेहपुर। कस्बे में ललौली रोड स्थित एक गेस्ट हाउस पर भारतीय दोसर वैश्य महासमिति का आठवां स्थापना दिवस केक काटकर एवं एक दूसरे को केक खिलाकर मनाया गया। विशिष्ट

अतिथि राष्ट्रीय संगठन महामंत्री विनोद गुप्ता ने विस्तारपूर्वक संगठन की स्थापना को लेकर जानकारी दी। मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष नारायण बाबू गुप्ता के भाषण से सदन तालियों से गूंज उठा। जिला उपाध्यक्ष अरविंद गुप्ता भारतीय ने संगठन को एक धागे बांधे रखने से लेकर एक दूसरे के सुख–दुख में भी खड़े होने की बात कही। जिला महामंत्री साजन गुप्ता एवं जिला मंत्री आनंद गुप्ता ने संगठन मजबूती पर बल देते हुए अपने विचार रखें। अध्यक्षता नगर अध्यक्ष अश्वनी गुप्ता व संचालन दिनेश ने किया। इस मौके पर दिनेश लोहिया, अन्नू गुप्ता, रामजी गुप्ता, सूर्यकुमार गुप्ता, संजय, प्रियव्रत आर्य, गोरेलाल गुप्ता, मनीष गुप्ता, अंशुल गुप्ता, विक्की गुप्ता, बड़ेगुप्ता, गौरव गुप्ता, हिमांशु गुप्ता सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

बालकृष्ण की लीलाओं में डूबा जरौली

- कथा पंडाल बना भक्तिका संगम

न्यूज वाणी ब्यूरो

फतेहपुर। स्वामी प्रियादास जी महाराज सेवा समिति जरौली के तत्वावधान व सनातन धर्म रक्षा महासंघ के सहयोग से प्रियादास महाराज समाधि स्थल जरौली कुटी में आयोजित श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के पंचम दिवस पर श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। कथा व्यास भार्गव मुनीश जी महाराज ने भगवान श्री.ष्ण की दिव्य बाल लीलाओं का ऐसा सजीव और मार्मिक वर्णन किया कि श्रोता भाव–विभोर हो उठे। कथा व्यास ने पूतना वध, शकटासुर संहार, माखन चोरी, माता यशोदा संग नटखट बाल.ष्ण की लीलाओं तथा गोप–ग्वालों के साथ खेल–कूद के प्रसंगों को अत्यंत रसपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि श्री.ष्ण की बाल लीलाएं मानव जीवन को प्रेम, करुणा, सरलता और निष्काम भक्ति का संदेश देती हैं, जो आज के युग में और भी प्रासंगिक है। कथा के दौरान प्रस्तुत भजनों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। भजन तेरी मंद मंद मुस्कनिया से बलिहार राघव जी की स्वर लहरियों के साथ श्रद्धालु झूम उठे और पूरा कथा पंडाल जयघोष से गूंज उठा। कार्यक्रम में परीक्षित श्रवण कुमार पत्नी शिव देवी एवं महावीर शर्मा पत्नी राजकुमारी सहित सनातन धर्म रक्षा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत चक्रेश जी महाराज, प्रदेश सचिव शिवकुमार पाठक, जिला प्रभारी अमर सिंह परिहार, जिलाध्यक्ष विवेक सिंह समेत अनेक पदाधिकारी, संत–महात्मा एवं सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। समिति पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। अंत में विधिवत आरती एवं भजन–कीर्तन के साथ पंचम दिवस की कथा का भावपूर्ण समापन हुआ।

स्वामी,प्रकाशक,मुद्रक, फतेहपुर किंग सेवा संस्थान के लिये नफीस अहमद जाफरी द्वारा जाफरी प्रिन्टर्स 170 महाजरी फतेहपुर उ0प्र0 से मुद्रित एंव प्रकाशित । सम्पादक नफीस अहमद जाफरी मो0 9451548620 R.N.I : UPHIN/ 2011/44792 (समस्त विवादो का न्याय क्षेत्र फतेहपुर)